Delhi Postal Regd. No. DL © -01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

भिक्षु वाणी

सोनारी छूरी चोखी घणी,
पिण पेट न मारे कोय।

सोने की छूरी कितनी ही अच्छी हो, पर पेट में मारने के लिए नहीं होती।

• नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 40 • 10 जुलाई - 16 जुलाई, 2023 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 08-7-2023 • पेज: 12 • ₹10

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में आचार्यश्री भिक्षु के जन्म दिवस का 'बोधि दिवस' के रूप में हुआ भव्य आयोजन

जन्म से ही विशेष बौद्धिक बल और निर्भिकता के धनी थे आचार्य भीखणजी : आचार्यश्री महाश्रमण

1 जुलाई 2023, नंदनवन

तीर्थंकर समवसरण में तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक आचार्यश्री भिक्षु के २९८वें जन्म दिवस एवं २६६वें बोधि दिवस पर महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आचार्यश्री भिक्षु को भावांजलि अर्पित करते हुए फरमाया कि जो वीर पुरुष होते हैं, वे महान पथ के प्रति प्रणत हो जाते हैं, श्रद्धाशील हो समर्पित हो जाते हैं। जहां वास्तविक प्रणमन होता है वहां भीतर में श्रद्धा का दर्शन भी हो सकता है।

श्रद्धा और समर्पण में गहरी अभिन्नता प्रतीत हो रही है। सिद्धांत या गुरु के प्रति श्रद्धा है तो फिर समर्पण भी हो जाता है।

दुनिया में जन्म तो हर आदमी लेता है, पर सारे व्यक्ति एक समान हो यह संभव नही है। गुणात्मकता का तारतम्य होता है। आज आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी और तेरापंथ धर्मसंघ के प्रथम अनुशास्ता परम पूज्य आचार्यश्री भिक्षु का जन्म दिवस है। शुक्ल त्रयोदशी आचार्यश्री भिक्षु के साथ निकटता से जुड़ी हुई है। उनका जन्म आषाढ़ शुक्ल त्रयोदशी को और महाप्रयाण भाद्रव शुक्ल त्रयोदशी को हुआ। इसी प्रकार उनका जन्म स्थली कंटालिया और महाप्रयाण भूमि सिरियारी में भी नैकट्य है। आचार्यश्री भिक्षु की जन्म त्रिशताब्दी का समय सामने आने वाला है।

आत्मा में अतीत के भी संस्कार होते हैं। आदमी वर्तमान के साथ पूर्व जन्म के कर्मों को भी साथ में लेकर आता है। इसलिए वर्तमान और अतीत को देखकर आदमी का आकलन हो सकता है। अतीत के आधार पर भविष्य भी बताया जा सकता है। आचार्यश्री भिक्षु का आज की तिथि को जन्म हुआ। जन्म से ही आचार्य भिक्षु में बौद्धिक बल और निर्भिकता रही थी। दीक्षा लेने के बाद वे एक दीपते संत के रूप में थे।

गुरु किसी शिष्य का विशेष आकलन करते हैं तो शिष्य के लिए विशेष बात होती है। किसी संदर्भ में गुरु के हृदय में शिष्य समा जाये तो विशेष बात होती है। आचार्यश्री भिक्षु ऐसे ही साधु थे। उन्होंने अपने गुरु का विश्वास प्राप्त किया था। आचार्यश्री भिक्षु को राजनगर भेजने की पृष्ठभूमि में इस विश्वास का दर्शन किया जा सकता है। उन्होंने राजनगर जाकर गुरु की आज्ञा को क्रियान्वित करने का भी प्रयास किया। आचार्यश्री भिक्षु बुद्धिमान होने के साथ-साथ समझाने में बड़े कुशल थे। उन्होंने अपनी समझाने की कला से राजनगर के श्रावकों को प्रभावित किया। श्रावकों ने वंदना करना शुरु कर दिया।

व्यक्ति के जीवन में कई बार कोई कष्ट आता है, वह बड़ा हित करने के लिए भी हो सकता है, अच्छा रास्ता दिखाने वाला हो सकता है। आचार्यश्री भिक्षु को भी उस समय बुखार हो गया। शेष पृष्ठ 8 पर

नंदनवन में चातुर्मास स्थापना से पूर्व हुआ दीक्षा समारोह का पावन आयोजन

सम्यक्त्व और चारित्र महान निधियां : आचार्यश्री महाश्रमण

29-06-23 नंदनवन

चातुर्मासिक प्रवेश के दूसरे दिन संयम के सुमेरु, संयम प्रदाता आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा दीक्षा आदान का पावन कार्यक्रम। दो समणियों का श्रेणी आरोहण, एक मुमुक्षु भाई विपुल की दीक्षा एवं चार मुमुक्षु बहनों की समणी दीक्षा का आयोजन। तीर्थंकर समवसरण में तीर्थंकर प्रतिनिधि ने सर्वप्रथम ध्यान का प्रयोग करवाया। पावन प्रेरणा प्रदान कराते हुए परम पावन ने फरमाया कि हमारी आत्मा, प्रत्येक आत्मा जो संसारी अवस्था में है, अनन्त काल से संसार में परिभ्रमण कर रही है। इस अनन्त काल की यात्रा में कई जीव ऐसे हैं, जिनकी यात्रा का कभी अन्त नहीं होगा। जैसे अभव्य जीवों की यात्रा का अन्त होगा ही नहीं। ऐसे भी अनन्त जीव हैं, जिनकी संसार परिभ्रमण की यात्रा का आरम्भ तो नहीं है पर समाप्त हो जाती है।

इस संसार परिभ्रमण से मुक्ति पाने का एक उपाय है- सम्यक्त्वी बन जाना, दूसरा उपाय है चारित्री बन जाना। ये दो महान निधियां होती हैं- सम्यक्त्व और चारित्र। सम्यक्त्व जैसा कोई बड़ा रत्न, मित्र या बन्धु नहीं होता। क्षायिक सम्यक्त्व की दिशा में हमारी गति हो। जो तीर्थंकरों द्वारा आवर्तित है, वही सत्य है, उसके प्रति मेरी श्रद्धा है, समर्पण है। सच्चाई और अच्छाई जहां भी मिले, उसका सम्मान करें, उसे ग्रहण करने का प्रयास करें। हमारे कषाय मुक्त हों, तत्त्व बोध प्राप्त करने का प्रयास और यथार्थ श्रद्धा हमारे सम्यक्त्व को पुष्ट करने वाली होती है। चारित्र के लिए सम्यक्त्व जरूरी है। दीक्षा के संदर्भ में आचार्य प्रवर ने फरमाया कि हमारे प्रवेश के दूसरे दिन ही दीक्षा का आयोजन हो रहा है, जो एक आध्यात्मिक मंगल है। आज के दीक्षा समारोह में जो साधु-साध्वियां व समणियां बनने जा रही हैं। दीक्षा का अवसर जीवन में आना बहुत बड़े भाग्य की बात है। सम्यक्त्व रत्न अमूल्य है। इसको पाने वाला सबसे बड़ा धनवान है।

शेष पृष्ठ 2 पर

♦ जो कल्याण में सहायक बने, वह कल्याणमित्र होता है। आत्मोथान की अभिप्रेरणा देना और उसमें सहायक बनना कल्याणमित्रता है।

-आचार्यश्री महाश्रमण

पृथम पृष्ठ का शेष

पूज्यवर ने मुमुक्षुओं के परिवारजन से लिखित आज्ञा के बाद मौखिक आज्ञा प्राप्त की एवं सभी दीक्षार्थियों को प्रेरणा प्रदान करवायी। दीक्षार्थियों की मानसिक दृढ़ता का अंतिम परीक्षण करते हुए उनकी सहमति प्राप्त की।

पूज्यवर ने भगवान महावीर को नमस्कार करते हुए आचार्यश्री भिक्षु व उनकी उत्तरवर्ती आचार्य परम्परा को वन्दन करते हुए गुरुदेवश्री तुलसी व आचार्यश्री महाप्रज्ञजी को श्रद्धा से नमन किया। पूज्यवर ने नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ सामायिक पाठ से साधु-साध्वी दीक्षा लेने वालों को सर्व सावद्य योग का आजीवन तीन करण तीन योग से त्याग करवाया। समणी दीक्षा वालों को असत्य, अब्रह्मचर्य, अपरिग्रह का निर्धारित सावध योग का तीन करण, तीन योग से आजीवन त्याग करवाया। सातों दीक्षार्थियों को आर्षवाणी से अतीत की आलोचना करवायी। दीक्षार्थियों ने कृतज्ञता ज्ञापन के साथ पूज्यवर को सविनय वंदना की।

पूज्यवर ने नव दीक्षित मुनि का एवं साध्वी प्रमुखाश्रीजी ने नवदीक्षित साध्वियों का केश लोच संस्कार किया। पूज्यवर ने नवदीक्षित मुनि को अहिंसा का प्रतीक रजोहरण एवं साध्वी प्रमुखाश्रीजी ने नवदीक्षित साध्वियों को रजोहरण प्रदान करवाया। नवदीक्षितों का नामकरण संस्कार कराते हुए पूज्यवर ने नये नाम इस प्रकार प्रदान किये-

मुमुक्षु विपुल- मुनि विपुलकुमार, समणी विनीतप्रज्ञा - साध्वी वैराग्यप्रभा, समणी जगतप्रज्ञा - साध्वी समत्वप्रभा, मुमुक्षु समता - समणी समत्वप्रज्ञा, मुमुक्षु आयुषी - समणी आर्जवप्रज्ञा, मुमुक्षु अंकिता - समणी अभयप्रज्ञा और मुमुक्षु संजना - समणी स्वातिप्रज्ञा।

श्रावक-श्राविका समाज ने नवदीक्षित साधु-साध्वियों को वन्दना की। समणीजी को वन्दामि नमंसामि किया। पूज्यवर ने नवदीक्षित साधु-साध्वियों व समणियों को पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि अब यत्नापूर्वक संयम का पालन करने का प्रयास हो। चलने, बोलने, उठने, बैठने, खाने-पीने, सोने अर्थात् सभी कार्यों में संयम का प्रयास रहे। पूज्यवर ने नवदीक्षित साध्वियों को साध्वीप्रमुखाजी की सन्निधि में, नवदीक्षित मुनि को मुनि दिनेशकुमारजी के संरक्षण व नवदीक्षित समणियों को साध्वीवर्याजी के संरक्षण में रहने की आज्ञा देते हुए उनके नवजीवन के आध्यात्मिक विकास की प्रेरणा प्रदान की। पूज्यवर ने मुमुक्षु कल्प को साधु प्रतिक्रमण का आदेश फरमाया। पारमार्थिक संस्था प्रवेश पाने वाली चार नई मुमुक्षु बहनों को मंगल पाठ फरमाया। पूज्यवर ने २१ रंगी तपस्या की प्रेरणा प्रदान की।

साध्वी प्रमुखाश्रीजी ने फरमाया कि अपनी आत्मा को जीतने वाला परम विजयी होता है। आज मुमुक्षु भाई बहन व समणियां गुरु चरणों में संयम का पथ स्वीकार करने के लिये उपस्थित हैं। जब व्यक्ति के मन मे वैराग्य का भाव आ जाये, प्रव्रज्या ग्रहण कर लेनी चाहिये। संसारपक्ष से मुंबई से संबद्ध मुनि जयेशकुमारजी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। साध्वी सुषमाकुमारीजी ने २१ रंगी तपस्या की प्रेरणा दी। साध्वी मधुस्मिताजी एवं उनके सिंघाड़े ने भावों व गीत से अपनी भावना श्रीचरणों में अभिव्यक्त की। मुमुक्षु मानवी व भाविका ने मुमुक्षुओं का परिचय दिया। समणी अक्षयप्रज्ञाजी ने श्रेणी आरोहण करने वाली समणियों का परिचय दिया। मुमुक्षुओं एवं श्रेणी आरोहण करने वाली समणियों ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। आज्ञापत्र का वाचन पा.शि.सं. के अध्यक्ष बजरंग जैन ने किया। मुमुक्षुओं के पारिवारिकजनों ने लिखित आज्ञा पत्र पूज्यवर को उपहृत किये। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

अध्यात्म की साधना राग-द्वेष को छोड़ने की साधना है : आचार्यश्री महाश्रमण

30 जून 2023, नंदनवन

परम समत्व के साधक आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मंगल देशना प्रदान कराते हुए फरमाया कि आत्मा के भीतर अनंतकाल से राग-द्वेष के संस्कार भी होते हैं। राग और द्वेष ये दो भाव कर्म के बीज होते हैं। जितना भी पाप कर्म का बंध होता है, उसका कारण राग-द्वेष का भाव होता है। राग जब तक रहेगा उसमें द्वेष का भाव थोड़ा पहले क्षीण हो जाता है पर राग का भाव द्वेष के जाने के बाद भी रहता है। अध्यात्म की साधना राग-द्वेष को छोड़ने की साधना है। राग-द्वेष को एक शब्द में मोह या कषाय कह सकते हैं। चार शब्दों में कहना हो तो क्रोध, मान, माया और लोभ। आदमी को मोह को कम करने का प्रयास करना चाहिये। मोह को त्याग कर समता में रहने की साधना की जाए। सारे धार्मिक तत्वों का केन्द्रीय तत्व समता है। समता से वीतरागता आती है। अनंतकाल से जो राग-द्वेष के भाव आ रहे हैं, उन्हें दूर करने का प्रयास हो।

अर्हत एवं तीर्थंकर अध्यात्म जगत के जैन शासन में प्रमुखतम व्यक्ति हैं। वे राग-द्वेष के विजेता हैं। सारे वीतराग पुरुष तीर्थंकर नहीं बन सकते। कोई-कोई अति पुण्यवान व्यक्ति ही तीर्थंकर बनता है। भरत-ऐरावत क्षेत्र में एक अवसर्पिणी या उत्सर्पिणीकाल में २४-२४ तीर्थंकर ही होते हैं। ये काल की व्यवस्था है। शेष पृष्ठ 11 पर

सम्प्रदाय के व्यामोह में फंसकर सत्य से दूर जानातुच्छ बात होती है। वीतरागता की साधना के लिए संप्रदाय आत्यंतिक नहीं, सहायक साधन होता है।

-आचार्यश्री महाश्रमण

मनुष्य सुगति प्राप्त करने का प्रयास करे : आचार्यश्री महाश्रमण

27 जून 23 जेपी गार्डन घोड़बंदर

जन-जन को कल्याण मार्ग की ओर अग्रसर करने वाले आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ अणुव्रत यात्रा संग घोड़बंदर के जेपी गार्डन पधारे। अर्हत् वाणी की अमृत वर्षा कराते हुए शान्तिदूत ने फरमाया कि मृत्यु के बाद मनुष्य दुर्गति या सुगति में जा सकता है। कोई-कोई मनुष्य मोक्ष को भी प्राप्त कर सकते हैं। आदमी कामनाओं से प्रतिबद्ध रह सकता है। आसक्ति, हिंसा, महापरिग्रह, महाआरम्भ, पंचेन्द्रिय प्राणियों का वध इत्यादि कारणों से आदमी दुर्गति में पैदा हो सकता है। चार गतियां- नरक गति, तिर्यन्च गति, मनुष्य गति और देव गति बतायी गयी है। हिंसा आदि कारणों से मनुष्य आयुष्य बांधकर नरक गति में जा सकता है। छल-कपट आदि ज्यादा करने वाले इन परिणामों में आयुष्य बांधकर तिर्यन्च गति-पशु आदि की योनि में पैदा हो सकते हैं।

जो मनुष्य सरल, विनीत, भद्र, दयालु है, ऐसे लोग मरकर वापस मनुष्य रूप में पैदा हो सकते हैं। जो मनुष्य त्याग और तपस्या ज्यादा करते हैं, वे मर कर देव गति में पैदा हो सकते हैं। कुछ-कुछ मनुष्य गहरी और पूर्ण साधना करके जन्म-मरण की परम्परा से मुक्त होकर सिद्धावस्था अर्थात मोक्ष को भी प्राप्त कर सकते हैं।

चार गतियां संसार की हैं और पांचवी गति मोक्ष की है। एक मनुष्य ही मोक्ष में सीधा जा सकता है। हम चिंतन करें कि हम दुर्गति में न जाएं। जन्म हुआ है तो मृत्यु तो अवश्य ही होगी। विज्ञान ने बहुत विकास किया है, पर महाविदेह क्षेत्र में तो विज्ञान भी नहीं ले जा सकता। अध्यात्म की दुनिया में एक केवलज्ञानी सारी दुनिया को जानता है। विज्ञान में ऐसी शक्ति नहीं है।

हमारे शास्त्रों की बातों के आधार पर विज्ञान कुछ आयास और करता है तो कुछ तथ्यों को जान सकता है। अध्यात्म और विज्ञान का मार्ग अलग हो सकता है। अध्यात्म का लक्ष्य है- वीतरागता, मोक्ष को प्राप्त करना। बाह्य शब्द, रूप, गंध, रस, स्पर्श के आति जो कामना है, वह भीतर से नहीं छूटती है। बाहर से छोड़ना त्याग हो सकता है। हमारे में भीतर से भी आसक्ति न हो।

आदमी बहिर्मुखी से अन्तर्मुखी बन जाये। आसक्ति न रहे तो वीतरागता आ जाती है। मोक्षश्री उसका वरण करने को तैयार रहती है।

भीतर को विकृतियां कमजोर पड़े, आदमी स्वभाव में आ जाए। कामना को जीतकर संतोष का जीवन जीए तो आदमी सुखी बन सकता है। संतोष बड़ा धन होता है। भीतर में निराकामता हो। नाम की भी कामना न रहे।

पूज्यवर के स्वागत में जेपी गार्डन के मालिक रवि पाटिल ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। व्यवस्था समिति द्वारा पाटिल परिवार का सम्मान किया गया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
10 जुलाई - 16 जुलाई, 2023

♦ एक बड़ी कठिनाई को झेलने का मतलब है विकास के सूर्य की तरफ एक छलांग भर लेगा।

-आचार्यश्री महाश्रमण

:: चातुर्मासिक मंगल प्रवेश ::

सिलीगुड़ी

आचार्यश्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि प्रशांतकुमारजी, मुनि कुमुदकुमारजी का सिलीगुड़ी तेरापंथ भवन में अत्यन्त उत्साहपूर्ण वातावरण में भव्य चातुर्मासिक मंगल प्रवेश हुआ। स्वागत समारोह को सम्बोधित करते हुए मुनि प्रशांतकुमारजी ने कहा— इस चातुर्मास का विशेष उपयोग करना है। अपनी क्षमता एवं शक्ति को बढ़ाना है। जीवन में मंगल का बड़ा महत्व होता है। अरिहंत, सिद्ध, साधु मंगलमय होते हैं। वे धर्म के प्रतीक होते हैं। संतों के पास जाए तब नम्र बनकर जाएं। नम्र बनने वाला ही ऊंचा उठता है। संतों के पास जाए तब अपने जूते चप्पल की तरह अहंकार आदि की ग्रंथियों को भी बाहर ही उतार कर धर्मस्थान में प्रवेश करें तब ही कुछ प्राप्त कर सकेंगे। जीवन में मंगल आचरण करने से जीवन मंगलमय बनता है।

मुनि कुमुदकुमारजी ने कहा- संतों का आगमन सोई चेतना को जगाने वाला होता है। चातुर्मास केवल बड़े-बड़े आयोजनों से ही सफल नहीं होता। संतों के चातुर्मास में तो तप-त्याग आदि आध्यात्मिक साधना चलनी चाहिए, इसी से जीवन की सार्थकता फलीत होती है।

कार्यक्रम का शुभारम्भ कन्या मण्डल एवं महिला मण्डल के मंगलाचरण से हुआ। सभा अध्यक्ष रुपचंद कोठारी ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। तेरापंथ युवक परिषद्, मनीषा सुराणा, अणुव्रत समिति, टीपीएफ महावीर बैद, ज्ञानशाला प्रशिक्षक, तेरापंथ ट्रस्ट के अध्यक्ष महेन्द्र डागा, दीपक महनोत, वर्धमान ऐजुकेशन ट्रस्ट से रतनलाल भंसाली, सुधा मालू, प्रेम पांडे, हेमंत कोठारी, दीपक बोथरा, सिक्किम सभा अध्यक्ष मनीष जैन, वीरेंद्र धाड़ेवा, कमल चौरड़िया, इस्लामपुर सभा अध्यक्ष नरेंद्र बैद, सुमन सेठिया, दलखोला से सुजान सेठिया, नरेंद्र सिंघी, किशनगंज से राजू कोठारी, संगीता घोषल ने मुनिगण के प्रति अभिनन्दन-स्वागत में भावपूर्ण वक्तव्य एवं गीतों की प्रस्तुति दी। मुनिश्री का परिचय कमल पुगलिया ने दिया। आभार ज्ञापन शशि बैद ने किया। कार्यक्रम का कुशल संयोजन सभा मंत्री मदन संचेती ने किया।

बोरावड़

आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी प्रांजलप्रभाजी ठाणा-4 का वर्ष 2023 के चातुर्मास हेतु मंगल मंत्रोच्चारण के साथ शुभ मुहुर्त में तेरापंथ भवन, बोरावड़ में मंगल प्रवेश किया। भव्य जुलूस में तेरापंथी सभा, महिला मंडल, युवक परिषद्, कन्या मंडल, विभिन्न संस्थाओं के सदस्यों के साथ सभी कौम के व्यक्ति अभिनंदन के लिये उपस्थित थे। प्रवेश के अवसर पर मकराना, डेगाना, ईड़वा, किशनगढ़ आदि क्षेत्रों से भी श्रावक समाज की अच्छी उपस्थिति रही।

दिल्ली

साध्वी अणिमाश्रीजी ठाणा-5 का चातुर्मासिक पावस प्रवेश के अवसर पर साध्वी अणिमाश्रीजी ने अपने प्रेरणादायी उद्बोधन में कहा— हर व्यक्ति संत नहीं बन सकता किन्तु शांत बनकर अपने जीवन को आनन्दमय बना सकता है। हर व्यक्ति पूर्ण संयमी नहीं बन सकता पर आंशिक संयम की आराधना कर अपनी आत्मा का ऊर्ध्वारोहण कर सकता है। हर व्यक्ति महाव्रती तो नहीं बन सकता किन्तु अणुव्रती बनकर साधना-आराधना तो कर सकता है।

साध्वी कर्णिकाश्रीजी ने जैनधर्म, तेरापंथ दर्शन का सामान्य अवबोध प्रदान कर जन-समुदय के ज्ञान भंडार को भरा। साध्वी डॉ. सुधाप्रभाजी ने तत्वज्ञान का रोचक प्रशिक्षण दिया। साध्वी समत्वयशाजी ने स्वर लहरी से समा बांधा। साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने आगम वाणी के दीप जलाए।

श्रावक समाज ने कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए कहा आपश्री ने मेहनत कर हमारे क्षेत्र में जागृति का शंखनाद किया है एवं धर्म की अच्छी प्रभावना की है।

बालोतरा

आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिष्या शासनश्री साध्वी सत्यप्रभाजी ठाणा-4 ने तेरापंथ भवन बालोतरा में मंगल प्रवेश किया। तेरापंथ समाज की सभी संस्थाएं तेरापंथी सभा, तेरापंथ युवक परिषद्, तेरापंथ महिला मंडल, किशोर मंडल, कन्या मंडल, अणुव्रत समिति, टीपीएफ, ज्ञानशाला के वर्तमान व पूर्व पदाधिकारी एवं महासभा, अभातेयुप, अभातेममं सदस्य और श्रावक-श्राविकाओं ने बड़े उत्साह के साथ साध्वीवृंद का स्वागत किया। मंगलप्रवेश पर सभा अध्यक्ष धनराज ओस्तवाल ने कहा हमारा अहोभाग्य है कि पूज्य गुरुदेव की कृपादृष्टि से बालोतरा को प्रथम बार दो-दो चातुर्मास मिले हैं।

शासनश्री साध्वी सत्यप्रभाजी ने कहा— पूज्य गुरुदेव के इंगितानुसार आज बालोतरा में चातुर्मासिक मंगल प्रवेश भवन में हो गया। सभी श्रावक-श्राविकाएं ज्यादा से ज्यादा धर्म आराधना, त्याग, तपस्या एवं दर्शन सेवा का लाभ लेने की प्रेरणा दी व कहा कि यहाँ संतों का भी चातुर्मास है तो सभी श्रावक-श्राविकाएं ज्यादा से ज्यादा जुड़कर सेवा-उपासना का लाभ लेवे। इस पूरे कार्यक्रम का बड़े ही सुंदर ढ़ंग से संचालन तेरापंथी सभा मंत्री महेंद्र बैद ने किया।

ओसवाल समाज के अध्यक्ष शांतिलाल डागा, सिवांची मालाणी क्षेत्रीय तेरापंथ संस्थान के अध्यक्ष डूंगरचंद सालेचा, तेयुप अध्यक्ष रोशन बागरेचा, महिला मंडल अध्यक्षा निर्मला संकलेचा, बालोतरा नगर परिषद् अध्यक्षा सुमित्रा जैन, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल सदस्या सारिका जी बागरेचा, मुमुक्षु प्रियंका ओस्तवाल, मुमुक्षु रुचिका कोचर, सुश्री शेफाली चौपड़ा, साध्वीश्री के संसारपक्षीय परिजन ने अपने विचार रखते हुए स्वागत अभिनन्दन किया एवं कन्या मंडल व महिला मंडल ने अपने गीत द्वारा भावों की प्रस्तुति दी।

साध्वी ध्यानप्रभाजी, साध्वी श्रुतप्रभाजी, साध्वी यशस्वीप्रभाजी ने अपने संबोधन एवं गीतिका के माध्यम से मंगल उद्बोधन दिया।

पर्वत पाटिया

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी हिमश्रीजी, शासनश्री साध्वी रमावतीजी आदि ठाणा का चतुर्मासिक मंगल प्रवेश तेरापंथ भवन पर्वत पाटिया में भव्य अनुशासन रैली के साथ बड़े उत्साह एवं हर्षोल्लास के साथ जैन संस्कारकगण द्वारा मंगल मंत्रोच्चार द्वारा हुआ। साध्वी हिमश्रीजी ने नमस्कार महामंत्र के मंगलाचरण से चतुर्मासिक प्रवेश कार्यक्रम की शुरुआत की। सभा अध्यक्ष गौतमचंद ढ़ेलड़िया ने सभी साध्वीवृंद एवं पधारे हुए महानुभवों का स्वागत-अभिनंदन किया। सम्पूर्ण श्रावक समाज के समक्ष सभी साध्वीवृंद का परिचय तेयुप निवर्तमान मंत्री विनय जैन ने दिया।

साध्वी हिमश्रीजी एवं शासनश्री साध्वी रमावतीजी ने अपने मंगल उद्बोधन में फरमाया कि साध्वीप्रमुखा विश्रुत विभाजी ने अपने कथन में फरमाया था कि पर्वत पाटिया क्षेत्र के श्रावकगण निष्ठावान तथा जागरूक हैं। यहां प्राय: तपस्या की गंगा बहती रहती है। यहां के श्रावक जप एवं तप के लिए सदैव तैयार रहते हैं एवं विशेषत: रुचि भी रखते हैं तथा यहां ऐसे तपस्वी रत्न हैं, जो बड़ी से बड़ी तपस्या का लक्ष्य भी सरलता से आसानी से प्राप्त कर लेते हैं। अत: ऐसे तपस्वी क्षेत्र में चातुर्मास बड़ा ही मंगलकारी साबित होगा।

तेरापंथ युवक परिषद् के नव मनोनीत अध्यक्ष दिलीप चावत, महिला मंडल अध्यक्षा ललिता पारख, आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति अध्यक्ष संजय सुराणा, गरिमा घोड़ावत, डोली कावड़िया, सूरत सभा मंत्री मुकेश बैद, लिंबायत सभा अध्यक्ष रतनलाल भालावत, चलथान अध्यक्ष सुरेश पितलिया, महिला मंडल उधना, कन्या मंडल, महासभा सहमंत्री अनिल चंडालिया एवं ज्ञान कोठारी ने अपने-अपने भावों की अभिव्यक्ति प्रस्तुत की। पर्वत पाटिया महिला मंडल एवं कन्या मंडल ने एक सुंदर गीतिका के संगान के साथ साध्वीवृंद का स्वागत-अभिनंदन किया। सभा मंत्री प्रदीप गंग ने चातुर्मासिक मंगल प्रवेश पर पधारे हुए सभी महानुभावों का आभार ज्ञापन किया। चतुर्मासिक मंगल प्रवेश कार्यक्रम का कुशल संचालन तेयुप पूर्व अध्यक्ष एवं उपासक चंद्रप्रकाश परमार ने किया।

गुवाहाटी

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी की विदुषी सुशिष्या साध्वी स्वर्णरेखाजी ठाणा-4 का तेरापंथ धर्मस्थल में भव्य चातुर्मासिक मंगल प्रवेश हुआ। इस अवसर पर आयोजित स्वागत समारोह को संबोधित करते हुए साध्वीजी ने फरमाया कि संत मानव का हर प्रकार से कल्याण करते हैं। संतों का बहुत बड़ा महत्व होता है। उनके जीवन से चरित्रों की सुगंध आती है। हम गुरु से ऑक्सीजन एवं शक्ति प्राप्त कर अपने जीवन को संवार सकते हैं।

इस मौके पर साध्वी सुधांशुप्रभाजी एवं गौतमयशाजी ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा कि खुश मन से काम करने से सफलता एवं खुशियां दोनों मिलती हैं।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष बजरंग कुमार सुराणा ने साध्वीवृंद का स्वागत किया।

अर्हम् भजन मंडली द्वारा प्रस्तुत मंगलाचरण से आरंभ स्वागत समारोह में तेयुप अध्यक्ष मनीष कुमार सिंघी, अणुव्रत समिति अध्यक्ष बजरंगलाल डोसी व नवमनोनीत अध्यक्ष बजरंग बैद, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम अध्यक्ष संतोष पुगलिया, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा मंजू देवी भंसाली ने अपने वक्तव्य एवं गीतिका के माध्यम से साध्वीवृंद का स्वागत-अभिनंदन किया। इसके अलावा ज्ञानशाला के बच्चों ने नृत्य नाटिका एवं कन्या मंडल की बहिनों ने परिसंवाद की भव्य प्रस्तुति दी।

इसके साथ ही युवतियों ने साध्वीवृंद का परिचय दिया एवं आस्था प्रेस्टीज परिवार ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। स्वागत समारोह में काफी संख्या में श्रावक- श्राविकाओं के साथ ही समाजबंधु उपस्थित थे। कार्यक्रम का कुशल संचालन निलेश पगारिया ने किया।

मैसूर

कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण, स्वागत गीतिका से हुआ। तेरापंथ सभा अध्यक्ष प्रकाश दक ने सभी का स्वागत किया। इस मंगल अवसर पर विधायक श्रीवस्थ ने मुनिश्री के प्रति मंगलभावना एवं कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए मुनिश्री के संयममय जीवन के बारे में जानकारी देते हुए अपने विचार व्यक्त किए।

अमरचंद दक ने मुनि रश्मिकुमारजी का संक्षिप्त परिचय दिया। विकास दक द्वारा मुनि प्रियांशुकुमारजी के बारे में संक्षिप्त परिचय दिया गया। सरगम टीम ने मुनिश्री का स्वागत गीतिका द्वारा स्वागत किया। मैसूर ज्ञानशाला विधार्थियों द्वारा मुनि प्रियांशुकुमारजी के बाल्यकाल से संयम जीवन पर आधारित चलचित्र द्वारा अपनी सुंदर प्रस्तुति दी। मुनि प्रियांशु कुमारजी के संसारपक्षीय नौलखा परिवार ने मुनिश्री का स्वागत गीतिका द्वारा किया। मुनि प्रियांशुकुमारजी ने अपना उद्बोधन देते हुए गुरु और धर्म के प्रति निष्ठा रखने एवं सबसे ज्यादा से ज्यादा धर्म ध्यान करने की प्रेरणा दी। मुनि रश्मिकुमारजी ने अपना मंगल संबोधन नमस्कार महामंत्र, मंगल जाप से प्रारंभ करते हुए फरमाया कि इस चातुर्मास में ज्यादा से ज्यादा जप, तप, त्याग, तपस्या कर अपने पाप कर्मों की निर्जरा करने का यह सुवर्ण अवसर है। इस चातुर्मास में ज्यादा से ज्यादा तप-तपस्या करने, आगामी सप्ताह तीन दिवसीय अखंड जाप, तेला, ज्यादा से ज्यादा संख्या में करने व धर्म लाभ लेने की प्रेरणा देते हुए आगामी चातुर्मास में होने वाले कार्यक्रम की जानकारी देते हुए सभी के प्रति मंगल कामना व्यक्त की।

इस अवसर पर मैसूर से जैन स्थानकवासी, मंदिरमार्गी, दिगंबर, साधुमार्गी संघ, पिंजरापोल संस्था के पदाधिकारीगण एवं बैंगलोर, विजयनगर, मंड्या, मैसूर क्षेत्र से टी नरसीपुर, गुंडलपेट, नंजूनगुड्डू, होले नरसीपुर, एचडी कोट, सरगुर, श्रीरंगापटन, पांडवपुर, बनूर, हुनसूर, कुशालनगर, प्रियापटना आदि अनेक क्षेत्र से गणमान्य सदस्यों की उपस्थिति रही। इस अहिंसा रैली और मंगल प्रवेश को सफल बनाने में तेयुप एवं सभा का अहम योगदान रहा।

कार्यक्रम का संचालन विकास दक, धन्यवाद सभा मंत्री महावीर मारू ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
10 जुलाई - 16 जुलाई, 2023

♦ व्यक्ति जिस कार्य में संलग्न हो, उसमें तल्लीन होना व एकाग्र होना भावक्रिया है।

-आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री भिक्षु जन्मोत्सव के आयोजन

फौलादी संकल्प के धनी थे आचार्य भिक्षु

पीतमपुरा, दिल्ली,

आचार्य भिक्षु के २९८वें जन्म दिवस पर शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु का जन्म सिंह स्वप्न से हुआ था। अतः माँ दीपा जी ने बड़े-बड़े सपने संजोए थे। मेरा बेटा राजा बनेगा। मैं राजमाता बनूँगी। घर में अतुल संपदा का साम्राज्य होगा। एक दिन स्थानकवासी संप्रदाय के आचार्य रघुनाथ दीपां को समझाने आए। तुम भिक्षु को दीक्षा की अनुमति दे दो। माँ ने कहा–मैं इसको दीक्षा नहीं दूँगी। मेरे स्वप्न के अनुसार यह भविष्य में राजा बनेगा। आचार्यश्री ने कहा कि तेरा बेटा दीक्षा लेकर सिंह की तरह गूंजेगा। तब आश्वस्त होकर माँ ने अनुमति दे दी। शासनश्री साध्वी सुव्रतांजी ने कहा कि आचार्य भिक्षु फौलादी संकल्प के धनी थे। उनको शल्य साधना और धर्म क्रांति से विचलित करने के लिए अनेकों भूचाल और तूफान आए पर वे हिमालय की तरह अचल रहे।

कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल द्वारा समुच्चारित गीत से हुआ। जैन विश्व भारती के पूर्व उपाध्यक्ष अरुण संचेती, तेरापंथी महासभा को उपाध्यक्ष संजय खटेड़, पीतमपुरा तेरापंथ सभा उपाध्यक्ष मनफूल बाई ने भिक्षु के संदर्भ में विचार व्यक्त किए। साध्वी कार्तिकप्रभा जी, साध्वी चिंतनप्रभा जी ने मधुर स्वर से भिक्षु गुणोत्कीर्तन किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी चिंतनप्रभा जी ने किया।

धर्म क्रांति के पुरोधा आचार्य भिक्षु

रोहिणी, दिल्ली

शासनश्री साध्वी संघमित्रा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, रोहिणी में आचार्य भिक्षु का जन्म दिवस व तेरापंथ स्थापना दिवस का कार्यक्रम रखा गया। साध्वी संघमित्रा जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु भारतीय गुरु परंपरा के गौरव थे, गुरुता के शिखर थे, ज्योति की निर्धूम शिखा थे। साहस का दरिया व सत्य के महान अन्वेषी थे। उनकी क्रांति थी सत्य के लिए जीवन मूल्यों के लिए। उनके हथियार सहनशीलता, निडरता, क्षमा, मैत्री व अहिंसा। उन्होंने आगे कहा कि आचार्य भिक्षु की धर्म क्रांति का प्रथम कदम बोधि दिवस यह दिन नव भान के उदय का दिन है। आचार्य भिक्षु के हृदय में आज के दिन एक दिव्य लौ प्रज्ज्वलित हुई। उसी लौ का प्रकाश आज समूचे तेरापंथ धर्मसंघ को आलोकित कर रहा है। वे तेरापंथ धर्मसंघ के प्रथम आचार्य थे। धम्म जागरणा में अनेक कलाकारों ने अपने स्वरों को बुलंद कर मीठी झंकार से वातावरण को भिक्षुमय बना दिया। शासनश्री साध्वी ललितप्रभा जी, साध्वी शीलप्रभा जी, साध्वी अमितश्री जी, साध्वी समाधिप्रभा जी व साध्वी ओजस्वीप्रभा जी ने गीत व विचारों की प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला प्रशिक्षिका प्रवीणा सिंघी एवं स्मिता बोथरा ने मंगल संगान किया। प्रदीप संचेती ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। मंच का संचालन साध्वी डॉ० सूरजयशा जी ने किया।

आचार्य श्री भिक्षु का 298वाँ जन्म दिवस एवं 266वाँ बोधि दिवस

हिसार।

हिसार में सत्य भवन के सभागार में आचार्य भिक्षु का २९८वाँ जन्म दिवस व २६६वाँ बोधि दिवस तपोमूर्ति मुनि पृथ्वीराज जी के सान्निध्य में मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ तपोमूर्ति मुनि पृथ्वीराज जी के द्वारा सामूहिक भक्तांबर पाठ से हुआ। महिला मंडल ने मंगलाचरण गीत द्वारा भावना प्रकट की। तपोमूर्ति मुनि पृथ्वीराज जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु तेरापंथ धर्मसंघ के संस्थापक आचार्यश्री भिक्षु का जन्म वि०सं० १७८३ आषाढ़ शुक्ल त्रयोदशी को राजस्थान के पाली जिले में कंटालिया ग्राम में हुआ। पिता बल्लू शाह संकलेचा व माता दीपाबाई की कुक्षि से मंगलवार को सिंह स्वप्न से हुआ।

आचार्य भिक्षु बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के धनी थे। आचार्य भिक्षु एक दार्शनिक संत, मौलिक लेखक, प्रखर वक्ता, मधुर संगायक तथा महान समाज सुधारक थे। मुनि जिज्ञासु कुमार जी ने आचार्य भिक्षु के जीवन पर संस्मरण सुनाए। मंच संचालन तेरापंथ सभा के मंत्री गौरव जैन ने किया। इस दौरान प्रतियोगिता भी करवाई गई। कार्यक्रम में सभा अध्यक्ष संजय जैन, सुरेश जैन, महिला मंडल अध्यक्षा योगिता जैन, किशोर मंडल से कार्तिक जैन ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम में लोगों की सराहनीय उपस्थिति रही। आसपास के क्षेत्र बालसमंद, आर्यनगर आदि से भी श्रावक उपस्थित रहे।

आचार्यश्री भिक्षु की वीतराग भगवान के प्रति गहरी आस्था थी

पेटलावद।

आचार्य भिक्षु एक महापुरुष हुए जिनके संयमी जीवन के स्मरण से हमारा हृदय प्रकाश से भर जाता है। उनका उच्च आचरण वाला जीवन हमारे लिए आदर्श रूप है। वे एकाभवतारी थे। आचार्य भिक्षु की वीतराग भगवान के प्रति गहरी आस्था थी। उक्त आशय के उद्गार मुनि सुव्रतकुमार जी ने तेरापंथ धर्मसंघ के प्रथम गुरु महामना आचार्यश्री भिक्षु के २९८वें जन्म दिवस व २६६वें बोधि दिवस पर तेरापंथ भवन में श्रावक-श्राविकाओं के समक्ष व्यक्त किए। आपने कहा कि आचार्य भिक्षु एक ऐसे महापुरुष थे, जिन्होंने जीवन भर कठिनाइयों को सहन किया। वे जीवन भर साधना के द्वारा कर्म निर्जरा करते रहे। भिक्षु स्वामी ने स्वयं के सिर में मुक्के मारने वाले विरोधियों तक के प्रति समभाव व सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखा। आपने प्रासंगिक रूप में तेरापंथ धर्मसंघ के विशिष्ट श्रावक श्रीचंद रामपुरिया के जीवन का उल्लेख किया। इस अवसर पर मुनि मंगलप्रकाश जी ने कहा कि आचार्यश्री भिक्षु का हम सब पर महान उपकार है। हम सही तत्त्व को सही समझने का प्रयास करें। आपने प्रासंगिक रूप में कहा कि हमारे गुरु हमारे लिए तीर्थयात्रा के समान हैं। गुरु आचार्यश्री महाश्रमणजी तीर्थंकर तुल्य हैं। इस अवसर पर मुनि शुभम कमार जी ने भी संबोधित किया। अनेक व्यक्तियों ने उपवास-एकासन के प्रत्याख्यान लिए।

त्रिदिवसीय कार्यक्रम का आयोजन

ग्रीन पार्क (दक्षिण दिल्ली)

साध्वी डॉ० कुंदनरेखा जी के सान्निध्य में 'त्रिदिवसीय कार्यक्रम' केंद्र द्वारा निर्धारित उल्लासमय वातावरण में मनाया गया।

साध्वी कुंदनरेखाजी ने कहा कि आचार्य भिक्षु का जन्म मानवता के मसीहा का जन्म था, जिन्होंने अपनी प्रत्युत्पन्न मेधा से बचपन में ही 'ज्ञानी गुरु' का न केवल खिताब पाया, बल्कि बड़े बुजुर्गों का सम्मान भी प्राप्त किया। राजनगर में बोधि प्राप्त कर तेरापंथ धर्मसंघ जैसी धरोहर दुनिया के कल्याण हेतु समर्पित की। मर्यादा, अनुशासन एवं एक गुरु के नेतृत्व में यह तेजस्वी धर्मसंघ निरंतर आध्यात्मिक ऊँचाईयों का स्पर्श कर रहा है।

साध्वी सौभाग्ययशाजी ने कहा कि संघ त्राण है, प्रतिष्ठा है, गति है। इसकी नींव फौलादी मर्यादा से इतनी सुदृढ़ है कि किसी भी तरह की विपरीत आँधियाँ कुछ नहीं बिगाड़ सकती। तेरापंथ स्थापना दिवस हमारे लिए नई प्रेरणा लेकर आया है।

साध्वी कल्याणयशाजी एवं साध्वी कर्तव्ययशा जी ने अपनी-अपनी भावनाएँ विचारों एवं गीतों के माध्यम से प्रस्तुति दी। तेरापंथ सभा, दक्षिण दिल्ली के अध्यक्ष हीरालाल गेलड़ा, दिल्ली तेरापंथ सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया ने अपनी भावांजलि आचार्य भिक्षु के चरणों में समर्पित की। रजनी बाफना, सोनिया दुगड़, सुमन कोठारी, रेणु दुगड़, हेमा चोरड़िया, कमल सेठिया, कुंमकुम संचेती कल्पना सेठिया, अरुणा डूंगरवाल, प्रदीप खटेड़ आदि ने अपनी-अपनी गीतिकाओं के द्वारा 'धम्म जागरणा' में समा बाँध दिया। साध्वी कल्याणयशाजी एवं साध्वी सौभाग्ययशाजी की मधुर स्वर लहरियों ने सबके मन को मोहित कर दिया। कार्यक्रम का प्रारंभ 'मंगलाचरण' हीरालाल गेलड़ा द्वारा किया गया।

अभिनंदन समारोह

कानपुर।

साध्वी संगीतश्रीजी आदि ठाणा के चातुर्मास हेतु कानपुर आगमन के उपलक्ष्य में एक अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया,साध्वी संगीतश्रीजी ने कहा कि आज का अभिनंदन स्वागत मेरा नहीं भारतीय संस्कृति का है, तप, त्याग का अभिनंदन है। आचार्यश्री महाश्रमणजी का स्वागत है। चातुर्मास त्याग, तप, मैत्री भावना के विकास की आराधना का सर्वश्रेष्ठ काल माना गया है। इसलिए इस समय का सदुपयोग करेंगे तो धर्म का लाभ लेंगे। मुख्य अतिथि क्षेत्रीय विधायक अमिताभ बाजपेयी थे। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीवृंद के महामंत्रोच्चार से हुआ। उसके बाद महिला मंडल ने मंगलाचरण की प्रस्तुति दी। तेयुप अध्यक्ष दिलीप मालू, महिला मंडल अध्यक्षा शालीनी बुच्चा, पूनमचंद सुराणा, मंजुला रामपुरिया, रिद्धिमा सुराणा, धनेश भूतोड़िया आदि लोगों ने गीतिका और वक्तव्य के माध्यम से अपने विचार रखे। तेयुप द्वारा एक गीतिका का संगान हुआ।

कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण रहा महिला मंडल की एक लघु नाटिका। सभा अध्यक्ष धनराज सुराणा और अणुव्रत समिति अध्यक्ष टीकमचंद सेठिया ने विधायक और श्रावक समाज का आभार व्यक्त किया। इसी क्रम में साध्वी शांतिप्रभाजी, साध्वी कमलविभाजी, साध्वी मुदिताश्रीजी ने कहा कि हम पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री महाश्रमणजी के आदेश अनुसार अपने गंतव्य स्थान पर पहुँच गए हैं, क्योंकि गुरु दृष्टि सुख की सृष्टि है। इस कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री संदीप जम्मड़ ने किया।

प्रज्ञा दिवस के उपलक्ष्य में शिविर का आयोजन

राजाजीनगर।

तेयुप, राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम के अंतर्गत आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के १०४वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में रियायती शुल्क पर पंद्रह विभिन्न जाँचें की गई। शिविर की शुरुआत सामूहिक नमस्कार महामंत्र से हुई, लगभग ८८ सदस्य लाभान्वित हुए।

तेयुप सदस्यों द्वारा उपस्थित जन-मानस को एटीडीसी द्वारा प्रदत्त सेवाओं, चिकित्सकों की उपलब्धता, फिजियोथेरेपी, अन्य विभिन्न सेवाओं के बारे में स्थानीय लोगों को जानकारी प्रदान की गई। स्थानीय लोगों ने मानव सेवा के इस उपक्रम की खूब सराहना की और परिषद परिवार का धन्यवाद व्यक्त किया। शिविर को सुव्यवस्थित आयोजन करने में एटीडीसी स्टॉफ पवन, स्मिता, अशेव्था, दीपाश्री, तेयुप से कमलेश चोरड़िया, मुकेश भंडारी एवं अभिषेक भंडारी एवं अभिषेक पीपाड़ा का अथक श्रम नियोजित हुआ।

♦ विपत्ति में साथ निभाने वाला बाहरी दुनिया का सच्चा मित्र हो सकता है।

-आचार्यश्री महाश्रमण

चातुर्मासिक मंगल प्रवेश

सिकंदराबाद

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के निर्देशानुसार साध्वी मंगलप्रज्ञाजी ने अपनी सहवर्तनी साध्वियों के साथ तेरापंथ भवन प्रांगण में चातुर्मासार्थ भव्य मंगल प्रवेश किया। मंगल प्रवेश पर साध्वी मंगल प्रज्ञाजी ने कहा– आज मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। गुरु निर्देश के अनुसार चातुर्मास प्रवेश हो गया है। यह स्वागत हमारा नहीं गुरुकृपा का स्वागत है। तेरापंथी मर्यादा और अनुशासन का स्वागत है। यह स्वागत गुरु दृष्टि का स्वागत है। सौभाग्य से हमें जैन शासन और भिक्षु शासन प्राप्त हुआ है। वर्तमान में परम पावन आचार्यश्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में हम साधना और आत्मोत्थान कर रहे हैं। आज का प्रवेश अध्यात्म, मैत्री, अनुशासन और मर्यादा का प्रवेश है।

साध्वीवृंद द्वारा 'महाश्रमण वन्दे- वन्दे' मंगल संगान से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। तेरापंथी सभाध्यक्ष बाबूलाल बेद ने साध्वीश्री के चातुर्मास हेतु गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि चेन्नई से समागत प्यारेलाल पितलिया, तेरापंथ सभा चेन्नई अध्यक्ष उगमराज सांड, तनसुख नाहर ने चेन्नई में साध्वीश्री के द्वारा दिए गए उपलब्धिपूर्ण चातुर्मास के प्रति प्रसन्नता व्यक्त की एवं हैदराबादवासियों को इस चातुर्मास प्राप्ति की बधाई दी। विकास परिषद् के सदस्य पदमचंद पटावरी, तेलंगाना अल्पसंख्यक आयोग के नवनिर्वाचित सदस्य हिमांशु बाफना, श्री जैन सेवा संघ के अध्यक्ष योगेश सिंघवी, तेरापंथ युवक परिषद् के अध्यक्ष विरेंद्र घोषल, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के अध्यक्ष पंकज संचेती, महिला मंडल अध्यक्ष अनीता गिरिया, अणुव्रत समिति अध्यक्ष प्रकाश भंडारी ने, जैन तेरापंथ वेलफेयर सोसायटी के अध्यक्ष महेंद्र भंडारी अपने स्वागत स्वर प्रस्तुत किए। ज्ञानशाला आंचलिक प्रभारी संगीता गोलछा एवं दिल्ली जयपुर से समागत ने साध्वी अणिमाश्रीजी द्वारा प्रदत्त शुभकामना गीत का संगान किया।

मुमुक्षु वीनू संकलेचा जैन ने साध्वीश्री की जीवन परिचय प्रस्तुत किया। मार्ग विहार सेवा प्रभारी प्रेम बेंगानी ने अपनी टीम की ओर से साध्वीवृंद का स्वागत किया। तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद्, तेरापंथ किशोर मंडल, कन्या मंडल के स्वागतम-सुस्वागतम गीत के एक स्वर में मधुर संगान ने तेरापंथ भवन प्रांगण को गुंजायमान बना दिया। कार्यक्रम का कुशल संचालन सभा के सहमंत्री राकेश सुराणा एवं पूर्व मंत्री विमल पुगलिया ने किया। आभार ज्ञापन सभा मंत्री सुशील संचेती ने किया।

नि:शुल्क मेडिकल शिविर का आयोजन

आमेट

तेरापंथ भवन आमेट में तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में आराध्या हॉस्पिटल अहमदाबाद की ओर से कैंप का आयोजन किया गया। साध्वी कीर्तिलताजी के मंगल पाठ के द्वारा कैंप का शुभारंभ हुआ। मुख्य वक्ता बसंती लाल बाबेल ने कहा कि ऐसा परोपकार एवं सेवा का कार्य महिला मंडल के द्वारा किया जा रहा है, इस सराहनीय कार्य के लिए सभी साधुवाद के पात्र हैं। महिला मंडल अध्यक्ष मीना गेलड़ा ने स्वागत अभिनंदन किया सभा अध्यक्ष देवेंद्र मेहता, ज्ञानेश्वर मेहता ने अपने विचार रखे।

डॉ. अमित बाबेल ने कान, नाक, गले की बीमारियों की रोकथाम एवं उपचार के बारे में सभी को विस्तार से समझाया एवं डॉ. रीची जैन ने कैंसर जैसी जानलेवा बीमारी से हम कैसे अपने आप को बचा सकते हैं, इस विषय को बहुत ही विस्तार से समझाया। इस शिविर कैंप में महिला मंडल की बहनों का अच्छा सहयोग मिला। करीब 100 लोगों ने अपने रजिस्ट्रेशन करवाकर चेकअप करवाया और दवाइयां भी फ्री में वितरित की गई।

कार्यक्रम में महासभा सदस्य प्रवीण ओस्तवाल, अशोक गेलड़ा, देवेंद्र बाफना, मनसुख बम्ब, तेरापंथ युवक परिषद् अध्यक्ष मनीष ढ़िलीवाल, मंत्री विपुल पितलिया निवर्तमान अध्यक्ष पवन कच्छारा व महिला मंडल नवोदिता बाफना, मीना कोठारी, रेणु छाजेड़, पुष्पा कोठारी, जतन देवी बम्ब आदि उपस्थित रहे। कार्यशाला का संयोजन सुधा मेहता ने किया। आभार ज्ञापन उपासिका मंजू गेलड़ा ने किया।

अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम

* अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
* श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
* श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
* श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
* श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
* श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
* श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
* श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
* श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
* श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
* श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
* श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी	5,00,000
* श्री बसंत नवलखा, बीकानेर	5,00,000
* श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर	5,00,000
* श्रद्धानिष्ठ श्रावक केशरीमल, अनिलकुमार, संजयकुमार, सुनीलकुमार चंडालिया (गंगापुर) सूरत	5,00,000

अपने संस्कार : अपनी निधि
जैन संस्कार विधि

नूतन गृह प्रवेश

विजयनगर

तेयुप विजयनगर द्वारा श्वेता जैन एवं उनके सुपुत्र आयान जैन के नूतन गृह प्रवेश का कार्यक्रम जैन संस्कार विधि से संपन्न किया गया। इस कार्यक्रम में तेयुप विजयनगर से विकास बांठिया एवं श्रेयांस गोलछा ने संस्कारक की भूमिका का निर्वहन करते हुए निर्दिष्ट विधि-विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार से कार्यक्रम को सम्पन्न करवाया गया।

पूर्वांचल-कुलकाता

तारानगर निवासी- पूर्वांचल-कोलकाता प्रवासी उपासक सुरेन्द्र सेठिया एवं परिषद के कर्मठ सदस्य विकास एवं आकाश सेठिया का नूतन गृह प्रवेश उपासक एवं संस्कारक विजय कुमार बरमेचा व महेन्द्र दुगड़ ने जैन संस्कार विधि से नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ परिवारजनों की उपस्थिति में संपादित करवाया। सेठिया परिवार द्वारा परिषद को इस आयोजन के लिए साधुवाद प्रेषित किया गया।

तेयुप- पूर्वांचल कोलकाता की ओर से पूर्व अध्यक्ष आलोक बरमेचा, सदस्य मुदित पुगलिया, निखार मालू, सिद्धार्थ डागा ने सेठिया परिवार के प्रति शुभकामनाएं प्रेषित की।

उदयपुर

तेरापंथ सभा के पूर्व अध्यक्ष राजकुमार-मंजू फत्तावत उदयपुर-गोगुन्दा निवासी के नूतन गृह प्रवेश जैन कार्यक्रम जैन संस्कार विधि से ही संस्कारक सुबोध दुगड़ ने मंत्रोच्चार के साथ सम्पन्न करवाया। मंगलपाठ मुनि सम्बोधकुमारजी ने श्रवण करवाया।

तेयुप अध्यक्ष विक्रम पगारिया, निवर्तमान अध्यक्ष अक्षय बडाला ने जैन संस्कार विधि अपनाने एवं पारिवारिकजनों के प्रति आभार ज्ञापित किया। इस अवसर पर तेयुप पूर्व अध्यक्ष दीपक सिंघवी, अरुण मेहता सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे।

प्रणय-जिगीशा फत्तावत ने आभार ज्ञापित किया। परिजनों के साथ-साथ उपस्थित सभी जनों को आध्यात्मिक संकल्प ग्रहण की प्रेरणा प्रदान की गई, जिसे सभी ने सहर्ष स्वीकार किया।

जन्मदिवस एवं वैवाहिक वर्षगांठ

साउथ हावड़ा

तेयुप साउथ हावड़ा द्वारा लूणकरणसर निवासी साउथ हावड़ा प्रवासी कंवर लाल राखेचा का जन्मदिन एवं 21वीं वैवाहिक वर्षगांठ जैन संस्कार विधि से मनाया गया। संस्कारक बीरेंद्र सेठिया एवं मनीष कुमार बैद ने जैन मंत्रोच्चार के द्वारा कार्यक्रम को संपादित कराया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के संगान से हुआ।

कंवर लाल ने धारणा अनुसार एक नवकार मंत्र की माला फेरने का संकल्प लिया। तेयुप अध्यक्ष गगनदीप बैद, अभातेयुप सदस्य सूर्यप्रकाश डागा, जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा संगठन मंत्री एवं पूर्व अध्यक्ष पवनकुमार बेंगानी, विनीत लोढ़ा, सुमित जैन, पूर्व अध्यक्ष राजेश बैद, सुनील सिंघी ने उपस्थिति होकर जन्मदिन की शुभकामनायें प्रेषित की। परिवार से सुंदरलाल राखेचा एवं सुपुत्री कनिका राखेचा ने परिषद् के प्रति आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित किया।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारम्भ

राजराजेश्वरीनगर

चंपालाल दुगड़ के नए प्रतिष्ठान क्रिएटिव प्लाइवुड का मंगल शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा तेरापंथ युवक परिषद् राजराजेश्वरीनगर द्वारा करवाया गया। संस्कारक दिनेश मरोठी व सहसंस्कारक गौतम नाहटा ने जैन संस्कार विधि के इस कार्यक्रम को विधि-विधान पूर्वक मंगलमय वातावरण में मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ संपन्न करवाया।

नवमनोनीत तेयुप अध्यक्ष विकाश छाजेड़ ने दुगड़ परिवार को नए प्रतिष्ठान के शुभारंभ पर शुभकामनाएं प्रेषित की। चंपालाल दुगड़ व उनके पूरे परिवार ने संस्कारक व सभी पधारे महानुभावों का आभार ज्ञापन किया।

♦ जो सहनशील होता है, वह सदा प्रसन्न और सुखी रह सकता है। सहनशील अपने क्षेत्र में विकास कर सकता है।
-आचार्यश्री महाश्रमण

मनोनुशासनम्

❊ आचार्य तुलसी ❊

व्यान - इसका स्थान हृदय है तथा गति सर्वत्वचा में है । गति, अंग को ऊपर-नीचे लाना, नेत्रादि को मूंदना खोलना आदि इसके कार्य हैं। यह अति भ्रमण, चिंता, खेल, विषम चेष्टा, रुक्ष-भोजन, भय, हर्ष एवं शोक से वित होती है। इसके परिणामस्वरूप पुरुषत्व की हानि, उत्साह-हानि, बल-हानि, चित्त की बेचौनी, अंगों में जड़ता आदि रोग उत्पन्न होते हैं। इसमें आकाश तत्त्व की प्रधानता होने के कारण इसका वर्ण सतरंगी इन्द्रधनुष जैसा होता है।

बहुत दिनों से बन्द मकान को खोलते ही दूषित वायु निकलती है। उससे कभी-कभी प्राणान्त तक हो जाता है। लोग भूत की कल्पना करते हैं पर वहां भूत का काम दूषित वायु ही करती है। सूर्यास्त के बाद बरगद आदि बड़े वृक्ष दूषित प्राणवायु छोड़ते हैं। उनके नीचे सोने वाले कभी-कभी मर जाते हैं। लोग वहां भी भूत की कल्पना करते हैं पर वहां भी भूत वही दूषित वायु होती है। प्राणवायु की शुद्धि - अशुद्धि को जानने वाला बहुत सारी कठिनाइयों से बच जाता है । अपान वायु दूषित न हो, इसका ध्यान रखना बहुत आवश्यक है। अधिक खाने, मलशुद्धि न होने तथा वेगों को रोकने से अपानवायु दूषित हो जाती है। मस्सा, नासूर आदि बीमारियां अपानवायु के दूषित होने से होती हैं। स्वभाव का चिड़चिड़ापन और मानसिक अप्रसन्नता भी दूषित अपानवायु के कारण होती है । आहार-शुद्धि, मलशुद्धि, अश्विनी मुद्रा और मूलबन्ध करने से अपानवायु की शुद्धि होती है। शरीर की अपानवायु को शुद्ध करने की क्रिया का नाम अपानायाम है। ऐसी कुछ क्रियाएं नीचे दी जाती हैं, जिन्हें विधिपूर्वक करके लाभ उठाया जा सकता है ।

1- प्रथम, पेट को सामने की ओर जितना फुला सकें, फुलाएं, फिर सिकोड़ें। नाभि को रीढ़ की हड्डी के साथ लगाने का प्रयत्न करें। इससे जहां अपान का अनुलोमन होता है, उसके साथ वीयं रक्षा भी होती है। अब दोनों हाथों को पेट पर रखें। अंगूठा पीछे रहे और अंगुलियां सामने की ओर हो। अब पेट को पूर्ववत् फुलाएं और बाएं हाथ से दायीं ओर दबाव डालें। दाएं हाथ से पीछे की ओर दबाव डालें। अब पेट को पीछे से बाएं-दाएं फुलाएं। इसी प्रकार कई दिनों तक अभ्यास करने से पेट स्वयं वायों से दायीं ओर होकर, फिर पीछे होकर बायीं ओर आ जाएगा। इसी प्रकार दायी ओर से चक्कर लगाने का अभ्यास करें । तत्पश्चात् पेट को ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर गतियां देनी चाहिए। इससे पेट की सफाई हो जाती है और अपानवायु वश में हो जाता है।

2- खड़े होकर श्वास को बिलकुल बाहर फेंककर कांख के दोनों पार्श्वों को भीतर खींचने का खूब यत्न करें। मध्यप्रदेश नाभिस्थल ऊपर रहे। इसका अभ्यास करने के लिए सामने कोई भेज हो या अन्य वस्तु जिसे खूब अच्छी तरह पकड़ा और उठाया जा सके। अब हाथों के बल सीधा ऊपर उठा जाए और वही क्रिया की जाए। नल स्वयं बाहर निकलेगा। अब बिना मेज के दोनों हाथों को घुटनों पर रखकर श्वास बाहर फेंककर कुक्षि-प्रदेश अन्दर खीचें। जब नल निकलने लग जाए तब श्वास चाहे अन्दर हो या बाहर, श्वास को बाहर रोककर नल निकाला जा सकता है और उसे आगे-पीछे खूब अच्छी तरह हिलाया जा सकता है। इस क्रिया से अपानवायु वश में होती है व पेट की बहुत-सी बीमारियां दूर हो जाती है।

3- आपने बहुत बार कुत्ते या बिल्ली को अंगड़ाई लेते देखा होगा। ठीक इसी प्रकार की स्थिति में हो जाइए। हाथों को सीधा आगे पसारिए। जमीन पर ठोड़ी या गाल लगे और घुटने अलग करके रखें। कमर को जितना हो सके झुकाएं। अब अपान को बाहर करने का प्रयत्न करें। उसके बाद स्वयं ही अपान अन्दर आने की कोशिश करेगा। इससे अफरा, सिरदर्द दूर होते हैं। अपानायाम में सिर्फ पूरक व रेचक ही करना चाहिए, कुम्भक नहीं। पेट को बिलकुल ढीला छोड़ देने से वायु बाहर हो जाता है।

प्राण, अपान आदि की विधिवत् साधना करने वाला बाह्य और आन्तरिक दोनों प्रकार की उपलब्धियों से सम्पन्न होता है। सोमदेव सूरि के अनुसार जो व्यक्ति पवन के प्रयोग में निपुण होता है, वह सिद्ध और सर्वज्ञ जैसा हो जाता है-

पवनप्रयोगनिपुणः सम्यक् सिद्धो भवेदशेषज्ञः

7- नासादिषु स्वस्वस्थानेषु रेचक पूरक- कुम्भकं स्तज्जयः म।।

पांचों वायुओं के जो अपने-अपने विचरण-स्थान है, वहां संकल्पपूर्वक रेचक, पूरक और कुम्भक करने से इन पर विजय प्राप्त होती है।

8- यें पें वें रौ लौं तद्ध्यानबीजानि ।।

पांचों वायुओं के ध्यान-बीज इस प्रकार हैं-

1- प्राण -यैं 2- अपान -पैं
3- समान -वैं 4- उदानें -रौं
5- व्यान -लौं

वायु-जय की प्रक्रिया

पूर्ववर्ती सूत्रों में वायु के स्थानों का निर्देश किया गया है। जिस वायु को अपने वश में करने की अपेक्षा होती है, उस पर मन को केन्द्रित करना आवश्यक होता है। प्राणवायु का मुख्य स्थान नासाग्र है। उसे अपने वश में करने के लिए नासाग्र पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। नासाग्र के द्वारा प्राण का आगम और निर्गम होता है। वहां मन को उसी प्रकार नियोजित करना चाहिए जिस प्रकार एक प्रहरी द्वार से जाने-आने वाले लोगों पर ध्यान केन्द्रित किये खड़ा रहता है। लम्बे समय तक प्राणवायु के आगम और निर्गम पर ध्यान केन्द्रित करने से वह साधक के अधीन हो जाती है। फिर साधक उसे शरीर के जिस भाग में ले जाना चाहता है, या स्थापित करना चाहता है, मन की गति के साथ वह वहीं चली जाती है या स्थापित होती है । इस प्रकार अन्य वायुओं पर भी ध्यान को केन्द्रित कर उन्हें अपने अधीन किया जा सकता है।

प्रत्येक वायु स्वाभाविक ढंग से अपना- अपना काम करती है किन्तु ध्यान के द्वारा उनमें विशेषता लायी जा सकती है और उनकी शक्ति का संवर्धन किया जा सकता है। इस कार्य के सम्पादन में प्राणायाम का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। रेचक के द्वारा उनके दूषित तत्त्वों को बाहर फेंक दिया जाता है। पूरक के द्वारा उनकी शक्ति को पुष्ट किया जाता है और कुम्भक के द्वारा उनकी कार्य-क्षमता को जागृत किया जाता है। साधक संकल्पपूर्वक रेचक, पूरक और कुम्भक कर वायु को अपने अधीन बना लेता है और फिर वह उनके द्वारा इष्ट कार्य का सम्पादन करता है। वायु पर ध्यान केन्द्रित करते समय उसके ध्यान-बीजों का भी आलम्बन लेना चाहिए।

90- जठराग्निप्राबल्यं वायुजयः शरीरलाघवञ्च प्राणस्य लब्धयः ।।

10 व्रणसंरोहण- अस्थिसन्धान-अग्निप्राबल्य-मलमूत्राल्पता व्याधिजयः अपान- समानयोः म

11- पंक-- कण्टकबाधा ऽभाव उदानस्य म।।

12- ताप पीड़ा ऽभावः आरोगित्वञ्च व्यानस्य ।।

13- चन्द्रनाड्या वायुमोंष्य पादाङ् गुष्ठान्तं तन्नयनं क्रमशः पुनरुन्नयन पुनर्नयनञ्च मनः स्थैर्याय ।।

14- पादाङ्गुष्ठतो लिङ् गपर्यन्तं वायुधारणेन शीघ्रगतिर्बलप्राप्तिश्च ।।

15- नाभी तद्धारणेन ज्वरादिनाशः ।।

16- जठरे तद्धारणेन कायशुद्धिः ।।

17- हृदये तद्धारणेन ज्ञानोपलब्धिः ।।

18- कूर्मनाड्यां तद्धारणेन रोगजराविनाशः ।।

19- कण्ठकूपस्य निम्नभागे स्थिता कुण्डलिसर्पाकारा नाडी कूर्मनाडी ।।

20- कण्ठकूपे तद्धारणेन क्षुत्तृषाजयः ।।

21- जिह्वा तद्धारणेन रसज्ञानम् ।।

22- नासाग्रे तद्धारणेन गन्धज्ञानम् ।।

23- चक्षुषोस्तद्धारणेन रूपज्ञानम् ।।

24- कपाले तद्धारणेन क्रोधोपशमः ।।

25- ब्रह्मरन्धे तद्धारणेन अदृश्यदर्शनम् ।।

9- प्राणवायु को जीतने से जठराग्नि प्रबल होती है। वायु जीत लिया जाता है और शरीर में हल्कापन आ जाता है।

10- अपान और समान वायु को जीतने से ये फल प्राप्त होते हैं-

1- व्रणसंरोहण - घाव मिटना ।

2- अस्थि-संधान - हड्डी जुड़ जाना

3- जठराग्नि की प्रबलता ।

4- मल और मूत्र की अल्पता ।

5-व्याधि पर विजय ।

11- उदान वायु पर विजय प्राप्त करने पर कीचड़, कांटे आदि बाधक नहीं बनते । लघुता प्राप्त होने से फंसना, चुभना आदि नहीं होते ।

12- ताप और पीड़ा का अभाव तथा नीरोगतों ये व्यान वायु की विजय के कार्य या फल हैं।

13- बाएं स्वर को चन्द्रनाड़ी तथा दाएं स्वर को सूर्यनाड़ी कहा जाता है। चन्द्रनाड़ी से पवन का आकर्षण कर उसे पैरों के अंगूठे तक ले जाना, क्रमशः उसे फिर ऊपर लाना, फिर नीचे ले जाना - इस प्रकार ऊपर- नीचे लाने-ले जाने से मन की स्थिरता प्राप्त होती है ।

14- पादांगुष्ठ से लिंग पर्यन्त वायु को धारण करने से शीघ्र गति और बल की प्राप्ति होती है।

15- नाभि में वायु को धारण करने से ज्वर आदि रोग नष्ट होते हैं

16- जठर में श्वायु को धारण करने से शरीर की शुद्धि होती है, मल क्षीण हो जाते हैं

17- हृदय में वायु को धारण करने से ज्ञान की उपलब्धि होती है।

18- कूर्मनाड़ी में वायु को धारण करने से रोग और बुढ़ापा नष्ट होता है।

19- कण्ठकूप के निचले भाग में कुण्डली मुद्रा में बैठे हुए सर्प के आकार की जो नाड़ी है, उसे कूर्मनाड़ी कहा जाता है।

(क्रमशः)

♦ शरीर समाप्त होता है, पर आत्मा समाप्त नहीं होती, वह अविनश्वर है। मृत्यु त्रैकालिक नियम है, इसलिए प्रतिक्षण व्यक्ति को सजग और पाप-सेवा से बचते रहना चाहिए।

-आचार्यश्री महाश्रमण

संबोधि

❊ आचार्य महाप्रज्ञ ❊

मिथ्या सम्यक् ज्ञान मिमांसा

- बंधन मुक्ति सहसा नहीं सध जाती । वह क्रमशः होती है। व्यक्ति के कमिक अभ्यास से वह प्राप्त होती है । दशवैकालिक सूत्र में मुक्ति के क्रम का बहुत सुन्दर प्रतिपादन हुआ है। ज्ञान के विकास के साथ-साथ अहिंसा का विकास होता है। अहिंसा साधन है, साध्य है मुक्ति । जीव और अजीव का ज्ञान अहिंसा का आधार है और उसका फल है, मुक्ति। इन दोनों के बीच में साधना का क्रम चलता है। मुक्ति का आरोह क्रम इस प्रकार हैं -

1- जीव - अजीव का ज्ञान ।
2 - जीवों की बहुविध गतियों का ज्ञान ।
3 - पुण्य, पाप, बंध और मोक्ष का ज्ञान ।
4 - भोग - विरक्ति ।
5 - आंतरिक और बाह्य संयोग - त्याग द्य
6 - अनगार-वृत्ति ।
7 - अनुत्तर - संवरयोग की प्राप्ति ।
8 - स्वरूप बाधक कर्मों का विलय ।
9 - केवलज्ञान, केवलदर्शन की उपलब्धि ।
10 - अयोग अवस्था ।
11 - सिद्धत्व प्राप्ति ।

प्रस्तुत श्लोकों में इन सबका समावेश पांच तथ्यों में दिया गया हे-

1 - मोह - संवरण,
2 - व्रत- ग्रहण,
3 - अप्रमत्त अवस्था की प्राप्ति,
4 - अकषाय वीतराग अवस्था की प्राप्ति और
5 - अयोग - संपूर्ण नैष्कर्म की प्राप्ति ।

23 - संवृतात्मा नवं कर्म, नादत्तेऽनाश्रवो यतिः।
अकर्मा जायते कर्म, क्षपयित्वा पुरार्जितम् म

संवृत आत्मा वाला यति नए कर्मों का ग्रहण नहीं करता। उसके आस्रव रुक जाते हैं और वह पूर्व अर्जित कर्मों को क्षीण कर, अकर्मा हो जाता है ।

24- अतीतं वर्तमानं च, भविष्यच्चिरकालिकम् ।
च, सर्वथा मन्यते त्रायी, दर्शनावरणान्तकःम

दर्शनावरणीय कर्म का अंत करने वाला यति चिरकालीन अतीत, वर्तमान और भविष्य को सर्वथा जान लेता है और वह सभी जीवों का रक्षक होता है।

25 - अन्तको विचिकित्सायाः, सर्वं जानात्यनीदृशम् ।
अनीदृशस्य शास्ता हि यत्र तत्र न विद्यतेम।।

जो विचिकित्सा-सन्देहों का अंत करने वाला है, वह तत्वों को कैसे जानता है, जैसे दूसरा नहीं जान पाता। असाधारण तत्त्व का शास्ता जहां-तहां नहीं मिलता।

सफलता उसे ही वरण करती है जो आस्थावान् और संदेह-रहित होता है। संशयशील व्यक्ति कितना ही बुद्धिमान क्यों न हो, वह लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता। श्रेष्ठी-पुत्र अपने ही अविश्वास से विद्या-सिद्धि में असफल रहा; जबकि चोर विद्या साध कर आकाश मार्ग में उड़ गया। **'श्रद्धावान् लभते ज्ञान'** - ज्ञान का विकास पूर्ण विश्वास से ही फलित होता है। श्रृद्धालु व्यक्ति में जैसी ज्ञान की स्फुरणा होती है वैसी दूसरे में नहीं होती।

(क्रमशः)

अवबोध

❊ मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ❊

कर्म बोध

प्रकृति प्रकरण

प्रश्न : द्रव्य करण किसे कहते हैं?
उत्तर : कर्म वर्गणाओं को आकर्षित कर आत्मसात् करना तथा उन्हें स्कंध के रूप में बांधना अर्थात् कार्मण शरीर के रूप में परिणत करना द्रव्य करण है।
प्रश्न : क्षेत्र करण किसे कहते हैं?
उत्तर : जिस क्षेत्र से जीव वर्गणा को ग्रहण कर कार्मण शरीर के रूप में परिणत करता है, उसे क्षेत्र करण कहते हैं। यह अपने संलग्न कर्म पुद्गलों को ही ग्रहण करता है। गृहीत कर्म वर्गणा कितने क्षेत्र को अवगाहित करती है तथा किस क्षेत्र विशेष में उदय में आएगी, इस निर्धारण को भी क्षेत्र करण कहते हैं।
प्रश्न : जिस क्षेत्र में जीव अवस्थित है, वहां से कुछ आकाश प्रदेश छोड़कर अगले आकाश प्रदेश पर स्थित चतुःस्पर्शी पुद्गल वर्गणा को ग्रहण कर सकता है?
उत्तर : नहीं कर सकता। अपने संलग्न आकाश प्रदेश में स्थित पुद्गल वर्गणा को ही जीव ग्रहण कर सकता है।

(क्रमशः)

उपासना

❊ आचार्य महाश्रमण ❊

जैन धर्म

जैन जीवनशैली

इस दुनिया में सबसे ज्यादा मूल्यवान् है जीवन और भी बहुत सारी वस्तुएं हैं, जिनका मूल्य है किंतु तुलनात्मक दृष्टि से देखें तो सबसे अधिक मूल्य है जीवन का। जीवन के होने पर सबकुछ है। जीवन न हो तो कुछ भी नहीं है। जिसके होने पर अन्य सबका अस्तित्व सामने आता है, उसका मूल्य कितना हो सकता है, इसको हर कोई समझ सकता है।

व्यक्ति का सारा प्रभाव उसकी जीवनशैली पर निर्भर है। प्रश्न हैं आदमी जीता कैसे है? जीना एक बात है और कैसे जीना, बिलकुल दूसरी बात है। यदि वह कलात्मक ढंग से जीता है तो जीवन बहुत सार्थक और सफल बन जाता है। यदि वह जीवन को जीना नहीं जानता, जीने की कला को नहीं जानता तो जीवन नीरस, बोझिल और निरर्थक जैसा प्रतीत होने लग जाता है। इसलिए आवश्यक है जीवनशैली का ज्ञान। वर्तमान की जीवनशैली अच्छी नहीं मानी जा रही है। इसके कई कारण हैं। भाग-दौड़, स्पर्धा, उतावलापन, हड़बड़ी आदि-आदि ऐसे तत्त्व जीवन में समा गये हैं, जो जीवन को सार्थक नहीं बना रहे हैं। शरीर स्वस्थ रहे, यह जीवन का एक लक्ष्य है। दूसरा लक्ष्य है मन स्वस्थ रहे, प्रसन्न रहे। तीसरा लक्ष्य हैं भावनाएं स्वस्थ रहें, निर्मल रहें, निषेधात्मक विचार न आएं, विधायकभाव निरंतर बने रहें, मैत्री और करुणा का विकास होता रहे। ये सब जीवन के उद्यान को हरा-भरा बनाने के लिए जरूरी हैं।

आज चारों ओर से एक स्वर सुनाई दे रहा हैं वर्तमान की जीवनशैली अच्छी नहीं है, उसमें परिवर्तन होना चाहिए, वह बदलनी चाहिए। आचार्य तुलसी ने भी इस स्वर को सुना, युग की भावना और उसकी नब्ज को पहचाना, पकड़ा। उन्हें लगा कि सचमुच ! जीवनशैली बदलनी चाहिए। किन्तु जीवनशैली कैसे बदले ? यह एक बड़ा प्रश्न है। जैनधर्म की जो जीवनशैली है, वह वीतरागता की शैली है। इस रागात्मक दुनिया में, और धन के प्रति अत्यधिक आकर्षण वाली इस दुनिया में यदि कोई समाधान हो सकता है तो वह वीतरागता का समाधान है। वीतरागता की ओर जाने वाली जीवनशैली सचमुच एक समाधान है। इस सचाई को ध्यान में रखकर योगक्षेम वर्ष में जीवनशैली के नौ सूत्रों का निर्धारण किया गया। वह नौ सूत्रात्मक जीवनशैली वर्तमान की अनेक समस्याओं का समाधान देती है।

सम्यक् दर्शन

जैन जीवनशैली का पहला सूत्र हैं सम्यक् दर्शन। मिथ्या दृष्टिकोण के कारण आज हिंसा बहुत बढ़ रही है, आतंक बढ़ा है, एक-दूसरे के प्रति संदेह बढ़ा है, विश्वास घटा है। ऐसा लगता है जीवन कहीं सुरक्षित ही नहीं है। ऐसा कोई स्थल, कोई आश्वासन आदमी खोज नहीं पा रहा है। जहां उसे सुरक्षा मिलती हो। उसका हेतु हैंमिथ्या दृष्टिकोण। इस मिथ्या दृष्टिकोण ने आदमी को इतना उलझा दिया है कि वह कोई निर्णय नहीं कर पा रहा है। राग संसारी प्राणी का एक जीवन-सूत्र होता है, किंतु जहां रागात्मक सीमा पार कर जाती है, वहां जीवन-सूत्र न बन कर मृत्यु-सूत्र बन जाती है। आज ऐसा लगता है कि रागात्मकता मृत्यु का सूत्र बनती जा रही है, क्योंकि उसके सामने कोई प्रतिरोधात्मक शक्ति नहीं यदि कोई प्रतिरोधात्मक शक्ति हो सकती है तो वह है वीतरागता ।

सम्यक् दर्शन वीतरागता का प्रतीक है। हमारा लक्ष्य बने वीतरागता । हमारा पथदर्शन बने वीतरागता । हमारा धर्म बने वीतराग। देव, गुरु और धर्म यह एक त्रिपुट है। एक वीतरागता का प्रतिपादन करने वाला, दूसरा वीतरागता का पथदर्शक और तीसरा वीतरागता का आचरण- यह सम्यक् दर्शन हमारी जीवनशैली का अंग बने तो सचमुच रागात्मक प्रवृत्ति पर अंकुश लगेगा। रागात्मकता के प्रति जो अति आकर्षण बढ़ा है, चाहे वह जाति, भाषा, प्रान्त आदि किसी भी संदर्भ में हो, उस पर एक अंकुश लगे तो निश्चय ही हमारी जीवनशैली एक शान्ति देने वाली, न्याय देने वाली, गरीब और अमीर के बीच की दीवार को मिटाने वाली शैली बनेगी। इस दृष्टि से प्रथम सूत्र बड़ा महत्त्वपूर्ण है। जीवनशैली का यहीं से प्रारंभ होता है। सम्यक् दर्शन प्रवेश द्वार है जैन जीवनशैली का। जिस व्यक्ति ने इस दरवाजे से प्रवेश किया है, उसके लिए आगे का रास्ता बहुत साफ है। उसके जीवन में सुख ही सुख होगा, उलझनें कम होंगी।

(क्रमशः)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
10 जुलाई - 16 जुलाई, 2023

♦ ध्यान व जप करना साधना है तो मेरा चिंतन है हर क्रिया में समत्व का अभ्यास रहे तो चलना, बोलना, लिखना आदि भी साधना हो सकती है।

-आचार्यश्री महाश्रमण

:: अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के आयोजन ::

स्वस्थ जीवन का आधार—योग

छापर

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर अणुव्रत बाल भारती स्कूल के विद्यार्थियों व समाज के गणमान्य व्यक्तियों के बीच शासनश्री मुनि विजय कुमारजी ने स्वस्थ जीवन का आधार योग विषय पर चर्चा करते हुए कहा— मनुष्य जीवन को देव दुर्लभ माना गया है। जीवन पाना और उसे सही ढ़ंग से जीना दो अलग-अलग बातें हैं। मनुष्य जीवन को सही ढ़ंग से वही जी सकता है जो प्रारंभ से ही उसके प्रति सजग हो। जो गफलत में जीते हैं वे कोहिनूर हीरे को कोड़ियों में बेच देते हैं। अंतिम समय में पश्चाताप के आंसू बहाना ही उनके लिये शेष रह जाता है। आज 21 जून का दिन पूरे विश्व में अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। अनेक देशों में योग पर चर्चा और प्रयोग कराए जा रहे हैं। स्वस्थ शरीर के लिए योग एक तरह से असली टॉनिक का काम करता है। योग के अभ्यासी व्यक्ति का इम्युनिटी पावर बढ़ जाता है, कोई रोग उसी के शरीर में घुसपैठ नहीं कर पाता है। कोई घुस भी जाए तो वह अपनी जड़ें नहीं जमा पाता है। स्वस्थ मन, स्वस्थ बुद्धि और स्वस्थ भाव भी जीवन की स्वस्थता के लिए जरूरी है। लंबा जीना महत्त्वपूर्ण नहीं है, जितना जीयें स्वस्थ और आनंद का जीवन जीएं तभी मनुष्य जीवन की सार्थकता है।

मुनिश्री ने अपने उद्बोधन से पूर्व योग के संदर्भ में गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के प्रारंभ में स्कूल की छात्राओं ने अणुव्रत गीत व तेरापंथ अणुव्रत समिति महिला टीम की बहनों ने मंगल गीत प्रस्तुत किया, अणुव्रत बाल भारती स्कूल के व्यवस्थापक श्योपालराम गोदारा, रेखाराम गोदारा, प्रिया सुथार, चैनरूप दायमा, सूरजमल नाहटा, कन्हैयालाल स्वामी ने अपने विचार रखे। अणुव्रत समिति संरक्षक प्रदीप सुराणा ने अध्यक्षता की व अणुव्रत समिति के अध्यक्ष विनोद नाहटा ने आभार ज्ञापित किया।

योग देता है जीवन जीने की कला

चंडीगढ़

मुनि विनयकुमारजी आलोक ने गोयल भवन में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर संबोधित करते हुए कहा कि योग मानसिक, आध्यात्मिक और शारीरिक पथ के माध्यम से जीवन जीने की कला सिखाता है। यह शांति प्राप्त करने अनुमति देता है। यह सीखने में भी मदद करता है कि कैसे मन, भावनाओं और कम शारीरिक जरूरतों की खींचातानी से ऊपर उठकर दैनिक जीवन की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। योग एक शरीर, मन और ऊर्जा के स्तर पर काम करता है। हमें योग के प्रति धैर्य रखना चाहिए। लोग आमतौर पर वजन कम करने के लिए दवाई, स्टेरॉयड या सर्जरी के उपयोग जैसे शॉर्टकट पसंद करते हैं, जो स्पष्ट रूप से समय की अवधि में बुरा प्रभाव डालते हैं।

मुनिश्री ने आगे फरमाया कि योग सभी के जीवन के लिए सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि यह शरीर और मन के बीच संबंधों को संतुलित करने में मदद करता है। यह व्यायाम का प्रकार है जो नियमित अभ्यास से शारीरिक और मानसिक अनुशासन सीखने में मदद करता है। इसकी उत्पत्ति भारत में बहुत समय पहले प्राचीन समय में हुई थी। प्रकार के योग हैं राज योग, ज्ञान योग, भक्ति योग, कर्म योग, हठ योग। कार्यक्रम में चंडीगढ, पंचकूला, मोहाली सहित पंजाब व हरियाणा से श्रावक-श्राविकाओं ने हिस्सा लिया।

करें योग, रहें निरोग

मुंबई

अणुव्रत विश्व भारती के तत्वावधान में जीवन विज्ञान विभाग द्वारा योग कार्यक्रम अणुव्रत समिति, मुंबई क्षेत्र (गोरेगांव जोगेश्वरी मलाड) ने जोगेश्वरी क्षेत्र में अरविंद स्कूल में भारतीय योग मंदिर के सहयोग से आयोजित किया। योगा प्रशिक्षक अस्मिता कामत एवं नयना पुजारी ने सभी को योग की अलग-अलग क्रियाएं करवाई एवं उन सभी को योग क्यों करना चाहिए ये भी जानकारी दी। मुख्य अतिथि के रूप में नगरसेवक पंकज यादव की विशेष भूमिका रही। इस योग प्रयोगशाला में गोरेगांव, जोगेश्वरी के अणुव्रत सदस्यों में दिनेश सिंघवी, राकेश बोहरा, डिम्पल हिरण, हेमंत कोठारी, नरेश सिंघवी, रमेश कोठारी, राकेश डागलिया, विनोद कच्छारा, उमेश कच्छारा, सीमा सिंघवी, नीता सिंघवी, गीता कोठारी, सीमा कोठारी, संगीता तलेसरा, चंदा कोठारी एवं योग मंदिर के 40 सदस्यों ने भाग लिया। पंकज यादव ने कार्यक्रम के अंत में सबका उत्साहवर्धन किया।

स्वस्थ जीवन का आधार है योग

कानपुर

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी संगीतश्रीजी ठाणा-4 के सान्निध्य में और अणुव्रत समिति, कानपुर के तत्वावधान में वृंदावन अपार्टमेंट, स्वरूप नगर में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीजी के महामंत्रोच्चार से हुआ। कनकलता जम्मड़, सुधा बुच्चा ने मंगल गीत प्रस्तुत किया। साध्वी संगीतश्रीजी ने कहा— करे योग, रहे निरोग। हमें स्वस्थ रहना है तो योगाभ्यास अवश्य करें ।योग भारतीय परंपरा और संस्कृति की अमूल्य धरोहर है। योग हमारी जीवनशैली में परिवर्तन लाकर हमें जागरूक करता है। शारीरिक, मानसिक व भावनात्मक रोगों से मुक्त होने के लिए योग जरूरी है। आचार्यश्री तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञजी ने अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान का ऐसा पैगाम दिया, जिससे योग साधना के द्वारा दीर्घश्वास, समवृतिश्वास, अनुलोम- विलोम आदि प्रयोगों के द्वारा हम स्वस्थता का अनुभव कर सकते हैं। योग वीतराग मार्ग का महान साधन है। तनाव और कषायों की मुक्ति का आमोद मंत्र है। इस कार्यक्रम में अणुव्रत समिति के मंत्री प्रमोद सुराणा, तेरापंथी सभा अध्यक्ष धनराज सुराणा, मंत्री संदीप जम्मड़ तथा अन्य श्रावक- श्राविका उपस्थित थे।

मुनिवृंद का मंगल प्रवेश एवं योग दिवस का आयोजन

बल्लारी

युगप्रधान, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी के सुशिष्य डॉ. मुनि पुलकितकुमारजी, मुनि आदित्यकुमारजी के बल्लारी नगर में मंगल प्रवेश करने के पश्चात मारवाड़ी गणेश मंदिर कोल बाजार बल्लारी में योग दिवस के उपलक्ष में दिव्य प्रेक्षायोग कार्यक्रम का आयोजन रखा गया। इस अवसर पर मुनि पुलकितकुमारजी ने फरमाया- भारत में जैन योग ध्यान पद्धति अति प्राचीनतम है। वर्तमान समय में बिगड़ते खानपान और प्रदूषण की स्थिति में योग की आवश्यकता महसूस हो रही है। योग से स्वस्थ और मस्त रहा जा सकता है। योग जीवन का अनिवार्य अंग बन चुका है। युवा वर्ग इसके महत्व को समझ कर तनाव मुक्त जीवन जीने का अभ्यास योग के द्वारा कर सकते हैं। नमस्कार महामंत्र उच्चारण से कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ। तेयुप अध्यक्ष पंकज छाजेड़, तेरापंथ सभा अध्यक्ष कमल छाजेड़ ने मुनिजी के बल्लारी नगर मंगल प्रवेश पर स्वागत अभिनंदन करते हुए योग कार्यक्रम करवाने के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। नचिकेता मुनिश्री आदित्यकुमारजी ने सभी कार्यकर्ताओं को लगभग एक घंटा योग ध्यान के प्रयोग करवाए तथा चातुर्मास में नियमित योग क्लास में सम्मिलित होने का आह्वान किया। योग कार्यक्रम में तेरापंथ के अलावा अन्य जैन समुदाय तथा जैनेतर अनेक युवाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम की जानकारी तेयुप के मंत्री अंकित खिंवेसरा ने दी।

भारतीय परंपरा में योग साधना का महनीय स्थान है

हैदराबाद

तेरापंथी सभा सिकंदराबाद के आयोजकत्व में मारेडपल्ली स्थित देवेंद्र कुमार विनय कुमार नाहटा के निवास स्थान पर साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञाजी के सान्निध्य में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया।

साध्वी मंगलप्रज्ञाजी ने योगार्थ उपस्थित संपूर्ण परिषद् को संबोधित करते हुए कहा— भारतीय परंपरा में योग साधना का अत्यधिक महत्व है। शक्ति, शांति और आनंद की प्राप्ति के लिए योग का आलंबन काफी कारगर सिद्ध हो रहा है। उन्होंने कहा तेरापंथ धर्मसंघ के नवमाचार्य गुरुदेवश्री तुलसी के निर्देशानुसार प्रेक्षा प्रणेता आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने वैज्ञानिक आधारित प्रेक्षाध्यान शिविर का प्रारंभ किया। प्रेक्षाध्यान के विभिन्न प्रयोगों से अनेक जटिल रोगों का भी निवारण हो रहा है। ध्वनि विज्ञान एक ऐसा सशक्त प्रयोग है, जिससे आसपास का वातावरण विशुद्ध बन जाता है और साधक आनंद तृप्ति का महत्वपूर्ण प्रयोग कर सकता है।

विरासत में प्राप्त इस शक्ति का हमें दृढ़ संकल्प के साथ उपयोग करना चाहिए। प्रशिक्षक ललित किशोर, बबीता एवं सीमा सिंह ने योग शिविरार्थियों को अनेक प्रयोग, आसन एवं प्राणायाम करवाए। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा सिकंदराबाद द्वारा प्रशिक्षकों का साहित्य द्वारा सम्मान किया गया। श्रीमती संचेती ने कहा हर व्यक्ति को योग के लिए समय जरूर निकालना चाहिए। योग स्वस्थता का सशक्त आधार है।

योग सर्वांगीण विकास की प्राचीन साधना है

भीलवाड़ा

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के शिष्य मुनि पारसकुमारजी के सान्निध्य एवं मुनि सिद्धप्रज्ञजी के निर्देशन में जयाचार्य भवन में भिक्षु विहार संस्थान एवं तेरापंथ सभा की ओर से योग दिवस आयोजित किया गया। मुनि सिद्धप्रज्ञजी ने योग प्रशिक्षण देने हेतु कहा कि योग का अर्थ केवल योगासन ही नहीं है। योग का अर्थ है— अप्राप्त की प्राप्ति। प्राप्त को ही पर्याप्त। इस अवसर पर मुनि सिद्धप्रज्ञजी ने योगिक क्रिया, आसन, प्राणायाम, कायोत्सर्ग, श्वास प्रेक्षा, ज्योति केंद्र प्रेक्षा, संकल्प, हास्य योग आदि के प्रयोग कराए। कार्यक्रम का प्रारंभ महिला मंडल भीलवाड़ा द्वारा प्रेक्षाध्यान गीत से हुआ। भिक्षु सेवा संस्थान के अध्यक्ष दिलीप मेहता ने स्वागत एवं मंत्री दिनेश गोखरू ने आभार ज्ञापित किया। सभी ने अच्छी रूचि से भाग लिया।

प्रथम पृष्ठ का शेष

उस कष्ट के कारण उनको सोचने का अवसर मिला। उन्होंने सोचा कि मेरा बुखार ठीक हो जाए तो मैं यथार्थ पर चलने का प्रयास करूंगा। मैं शास्त्रों का गहराई से अध्ययन करूंगा और निर्णय करूंगा। स्वामीजी को सत्य का बोध हुआ कि श्रावकों की बात सही है, शास्त्रों के अनुरूप है। उस बोध के आधार पर आचार्यश्री भिक्षु ने एक धर्मक्रांति की।

आज के दिन एक विशेष महान आत्मा प्रकट हुई थी, जो हमें हमारे आद्यप्रवर्तक के रूप में प्राप्त हुई थी। पूज्यवर ने 'ज्योति का अवतार बाबा, ज्योति ले आया' गीत की कुछ पंक्तियों के साथ आचार्यश्री भिक्षु के प्रति श्रद्धा प्रणति करते हुए फरमाया कि संत भीखणजी भी महान पथ के प्रति प्रणत हुए थे। स्वामीजी के ग्रंथों को पढ़ने से हमें ज्ञान प्राप्त हो सकता है। चिंतन भी प्राप्त हो सकता है। उनमें ज्ञान था, वे साहित्यकार व्यक्तित्व थे, बुद्धिमान और नेतृत्व करने वाले संत थे।

बोधि दिवस के अवसर पर मुंबई वासियों द्वारा इक्कीस रंगी तपस्या में सहभागी तपस्वियों को आचार्य प्रवर ने प्रत्याख्यान करवाया एवं मंगलपाठ सुनाया।

साध्वी प्रमुखाश्रीजी ने फरमाया कि आचार्यश्री भिक्षु बचपन से ही औत्पतिकी बुद्धि के धनी थे। उनकी अंतर्दृष्टि भी विकसित थी। हमारे वर्तमान परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के पास भी अंतर्दृष्टि है। आचार्य प्रवर के सान्निध्य में हम भी बोधि को प्राप्त करने और मोक्ष को प्राप्त करने की दिशा में आगे बढ़ते रहें।

भिक्षु जन्म दिवस व बोधि दिवस पर मुनि मोहजीतकुमारजी, मुनि योगेश कुमारजी, साध्वी निर्वाणश्रीजी, साध्वी स्तुतिप्रभाजी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। साध्वीवृंद ने समूह गीत प्रस्तुत किया। नौवीं प्रतिमा की साधना में संलग्न डालचंद कोठारी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। उन्होंने स्वयं के द्वारा संकलित एक पुस्तक भी श्रीचरणों में अर्पित की।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

♦ जैन धर्म में दो प्रकार के कर्म माने गए हैं -पुण्यकर्म और पापकर्म। पुण्यकर्म अनुकूल और पाप कर्म प्रतिकूल होते हैं।

-आचार्यश्री महाश्रमण

:: तेरापंथ प्रोफेशनल द्वारा विविध आयोजन ::

स्थापना दिवस उर्ध्वारोहण कार्यक्रम

कोलकाता

कोलकाता में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के आज्ञानुवर्ती मुनि जिनेश कुमारजी ठाणा-3 के सान्निध्य में प्रात: कालीन प्रवचन के दौरान टीपीएफ कोलकाता एवं हावड़ा रीजन द्वारा तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम स्थापना दिवस बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। मुनि परमानंदजी ने कार्यक्रम का संचालन किया। कार्यक्रम की शुरुआत सभी टीपीएफ सदस्यों ने टीपीएफ गीत के पावन संगान से की। टीपीएफ साउथ कोलकाता के अध्यक्ष आलोक चोपड़ा ने सभी का गर्मजोशी से स्वागत किया।

टीपीएफ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रकाश मालू, पूर्व टीपीएफ महामंत्री सुशील चोरड़िया और पूर्व न्यासी जयचंद मालू, टीपीएफ ईस्ट जोन-1 के अध्यक्ष धर्मचंद धाड़ेवा, टीपीएफ नेशनल फेमिना को- कन्वेनर कंचन सिरोहिया, शांता पुगलिया, सीनियर टीपीएफ मेंबर डॉ. अमीचंद दूगड़ ने अपनी भावनाएं व्यक्त की।

मुनि जिनेशकुमारजी ने अपने मंगल उद्बोधन में फरमाया कि तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम हमारे समाज के बुद्धिजीवी श्रावक-श्राविकाओं की संस्था है। पुरुषों और महिलाओं में गत दशक में शिक्षा के क्षेत्र में बहुत विकास हुआ है। इन सभी की क्षमता व शक्तियों का नियोजन तेरापंथ धर्मसंघ की प्रभावना में लगना और इनका जैन धर्म की आध्यात्मिक गतिविधियों में सम्मिलित होना बहुत ही सात्विक हर्ष का विषय है।

धन्यवाद ज्ञापन के क्रम में टीपीएफ कोलकाता जनरल अध्यक्षा बबीता बैद ने मुनिश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए सभी पधारे हुए श्रावक समाज को टीपीएफ परिवार की तरफ से आभार जताया। कार्यक्रम में स्थानीय संघीय संस्थाओं के पदाधिकारीगण एवं समाज के विशिष्ट एवं गणमान्य व्यक्तियों के साथ अच्छी संख्या में टीपीएफ सदस्य एवं श्रावक समाज की उपस्थिति थी। उपाध्यक्ष हर्ष दूगड़, मंत्री निधि कोचर, संगठन मंत्री सुमित नाहटा का कार्यक्रम में उल्लेखनीय योगदान रहा।

ऊर्ध्वारोहण-टीपीएफ तब से अब तक

हैदराबाद

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम हैदराबाद द्वारा आज साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञाजी ठाणा-6 के पावन सान्निध्य में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम फाउंडेशन डे कार्यक्रम कम्यूनिटी हाल एपी टेक्स्ट बुक कॉलोनी में आयोजित किया गया।

'ऊर्ध्वारोहण-टीपीएफ तब से अब तक' शीर्षक से आयोजित इस कार्यक्रम में साध्वीश्री ने फरमाया कि अनेक अच्छी योजनाएं टीपीएफ के पास है। हैदराबाद में भी हर घर में टीपीएफ है यानि टीपीएफ के सदस्य बनने योग्य प्रोफेशनल्स हैं। साध्वीश्री ने प्रेरणा देते हुए फरमाया कि टीपीएफ में ज्यादा से ज्यादा सदस्य शामिल हो।

इस कार्यक्रम में विकास परिषद् सदस्य पदमचंद पटावरी भी उपस्थित थे। आज के इस कार्यक्रम में टीपीएफ नेशनल मीडिया द्वारा टीपीफ फाउंडेशन डे पर प्रसारित वीडियो का भी अवलोकन किया गया। टीपीएफ नेशनल टीम से नवीन सुराणा और साउथ जोन अध्यक्ष मोहित बैद ने टीपीएफ की स्थापना कैसे हुई और टीपीएफ के उद्देश्यों और योजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

हैदराबाद अध्यक्ष पंकज संचेती ने सभी का स्वागत किया और टीपीएफ की योजनाओं में आर्थिक अनुदान निवेदन भी किया। इस कार्यक्रम में समाज के लगभग 150 व्यक्तियों की संख्या में उपस्थिति रही। टीपीएफ के नेशनल आर्गेनाइजेशन चेयरमैन ऋषभ दुगड़ और टीपीएफ नॉलेज बैंक के चेयरमैन दीपक संचेती की गरिमामय उपस्थिति रही। टीपीएफ के सदस्य भी अच्छी संख्या में उपस्थित थे।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम फाउंडेशन दिवस का आयोजन

चेन्नई

आचार्यश्री महाश्रमण तेरापंथ जैन पब्लिक स्कूल, माधावरम में साध्वी लावण्याश्रीजी ठाणा-3 के सान्निध्य में प्रात:कालीन टीपीएफ चेन्नई द्वारा तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम फाउंडेशन डे मनाया गया। अध्यक्ष प्रसन्न बोथरा ने सभी का स्वागत किया। एएमकेसी के चेयरमैन डॉ. दिनेश धोका ने टीपीएफ एवं उसकी गतिविधियों के बारे में जानकारी दी।

साध्वीश्रीजी ने अपने मंगल उद्बोधन में फरमाया कि तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम हमारे समाज के बुद्धिजीवी श्रावक-श्राविकाओं की संस्था है।

साध्वीश्री ने आगे फरमाया कि प्रज्ञा पुरुष आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के 104वें जन्मदिवस समारोह ''प्रज्ञा दिवस'' के संग तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के फाउंडेशन डे का भी समारोह होना एक बहुत ही अच्छा संयोग है।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के फाउंडेशन दिवस के उपलक्ष में मेगा मेडिकल कैंप का आयोजन टीपीएफ चेन्नई द्वारा किया गया। डॉ. कमलेश नाहर, डॉ. सुरेश सकलेचा, डॉ. सुनील आच्छा, डॉ. सुभाष जैन, डॉ. मधु सकलेचा, डॉ. लीला बांठिया, डॉ. विग्नेश भंसाली, डॉ. संतोष नाहर, डॉ. विजय जैन, नेत्र जांच के लिए अमृत हॉस्पिटल टीम ने अपनी सेवाएं दी। कैम्प समाप्ति पर इन सभी का सम्मान साध्वीश्रीजी के सान्निध्य में किया गया। लगभग 80 से ज्यादा व्यक्तियों की जांच हुई और विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा परामर्श मिला। कार्यक्रम के आयोजन में कोषाध्यक्ष अखिल कोचर, अनिल लुणावत, श्रेणिक गादिया आदि का सहयोग रहा। कार्यक्रम में स्थानीय संघीय संस्थाओं के पदाधिकारीगण एवं समाज के विशिष्ट एवं गणमान्य व्यक्तियों के साथ अच्छी संख्या में श्रावक समाज की उपस्थिति थी। कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री सुधीर आंचलिया ने किया।

टीपीएफ स्थापना दिवस का आयोजन

हासन

तेरापंथी सभा भवन, हासन में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम का स्थापना दिवस मनाया गया। टीपीएफ अध्यक्ष भरत भंसाली ने स्वागत करते हुए टीपीएफ के अंतर्गत होने वाले कार्यों की जानकारी दी। इस मौके पर सामूहिक सामायिक का कार्यक्रम रखा गया। ममता कोठारी ने जयाचार्यश्री द्वारा रचित मुनींद मोरा ढाल के वृतांत के बारे में समझाया।

तेरापंथी सभा अध्यक्ष सुरेंद्र तातेड़, मंत्री सुरेश कोठारी, जयंतीलाल कोठारी, मलनाड तेरापंथ समिति उपाध्यक्ष महावीर भंसाली, तेयुप अध्यक्ष गौरव गुलगुलिया, महिला मंडल अध्यक्ष संगीता कोठारी ने हासन टीपीएफ के कार्य की सराहना की।

टीपीएफ मंत्री पूजा कोठारी ने आभार ज्ञापन किया।

264वें तेरापंथ स्थापना दिवस का आयोजन

विजयनगर, बैंगलोर।

विजयनगर स्थित तेरापंथ भवन में मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में २६४वें तेरापंथ स्थापना दिवस का आयोजन तेरापंथ सभा द्वारा किया गया। कार्यक्रम में हनुमंत नगर, राजराजेश्वरी नगर, राजाजीनगर एवं आसपास के क्षेत्र के श्रावक-श्राविकाओं की अच्छी उपस्थिति रही। मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि आज तेरापंथ स्थापना दिवस और गुरु पूर्णिमा भी है। आज के दिन तेरापंथ धर्म को एक गुरु मिला। गुरु पूर्णिमा के दिन ऐसा गुरु जिसमें गरिमा थी, गौरव था, गुरुत्व था। गुरु अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाले होते हैं। आचार्य भिक्षु ने आज के दिन अंधेरी ओरी में प्रकाश किया था।

इस अवसर पर हम संघ और संघपति की सेवा का संकल्प लें। मुनि काव्य कुमार जी ने कहा कि तेरापंथ अनुशासित धर्मसंघ है, यहाँ अनुशासनहीनता अक्षम्य अपराध है। सभा अध्यक्ष प्रकाश गांधी ने तेरापंथ स्थापना दिवस पर संपूर्ण समाज को शुभकामनाएँ प्रेषित की। इस अवसर पर तेरापंथ सभा, तेयुप, महिला मंडल के पदाधिकारी सदस्यगण एवं संपूर्ण श्रावक समाज की उपस्थिति रही।

पिता कन्यादान के साथ परिवार, समाज, धर्म के संस्कार दे

इस्लामपुर

मुनि प्रशांत कुमारजी के सान्निध्य में अभातेममं के निर्देशन में तेममं इस्लामपुर द्वारा कन्यादान आखिर क्यों? कार्यक्रम आयोजित हुआ। मुनि प्रशांत कुमारजी ने कहा कि ज्ञान वस्तु है क्या? फिर भी ज्ञान का दान दिया जाता है। अभयदान भी कोई वस्तु नहीं है। आपके जीवन में जो अच्छाइयाँ हैं, जो गुण हैं, वह धन है। साधु जीवन में चारित्र है, वह सबसे बड़ा धन है। जो पाँच महाव्रत है, वह धन है। साध को अपने धन की सुरक्षा करनी है। महाव्रतों का सम्यक् रूप से पालन करके आत्मा को पापकर्म से बचाना है। परिवार को संस्कारी बनाना यह शिक्षा का सार होना चाहिए। परिवार में बड़ों के साथ कैसा व्यवहार होना चाहिए? सेवा का गुण होना चाहिए। मानवीय गुणों का विकास होना चाहिए।

वर्तमान समय में सबसे ज्यादा अपेक्षा है कि माता-पिता कन्यादान के साथ परिवार, समाज एवं धर्म के संस्कारों का ज्ञान दें। एक आदर्श नारी बनकर समाज के लिए प्रेरणा बनें। मुनि कुमुद कुमारजी ने कहा कि जैन दर्शन में तीन दान माने गए हैं-अभयदान, ज्ञानदान, सुपात्रदान। दान का मतलब देना। कन्या को एक पिता कुशल हाथ में सौंपता है। पति अपने धर्म का पालन करते हुए अपनी पत्नी का संरक्षण सम्यक् रूप से करता है। पत्नी पति धर्म का पालन करती है। जिससे गृहस्थ जीवन का दायित्व दोनों सम्यक् रूप में निभा पाते हैं। सामाजिक व्यवस्था सुचारु रूप से चलती रहती है। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल के गीत से हुआ। महिला मंडल अध्यक्षा सरिता सिंघी ने वक्तव्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री संगीता गोलछा ने किया।

प्रेक्षाध्यान एवं योग तनाव मुक्ति की प्रक्रिया

साउथ कोलकाता

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि जिनेशकुमारजी ठाणा-३ के सान्निध्य में प्रेक्षा फाउंडेशन के तत्वावधान में अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में योगोत्सव का आयोजन किया गया, जिसमें सभा, प्रेक्षावाहिनी, तेयुप, तेमम, टीपीएफ भी सहभागी रही। इस अवसर पर उपस्थित योग सभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेशकुमारजी ने कहा आत्मा पारस है मोह का आवरण उसे लोहा बना देता है। मोह के आवरण को हटाने का उपाय है- ध्यान। ध्यान भारतीय संस्कृति की आत्मा है। ध्यान स्वभाव परिवर्तन की प्रक्रिया है। ध्यान के माध्यम से व्यक्ति अनेक शक्तियों को उद्घाटित कर सकता है। हम कोई भी कार्य करें उसमें जागरूकता जरूरी है। मुनि जिनेशकुमारजी ने आगे कहा प्रेक्षाध्यान एवं योग व्यक्ति स्वस्थ बनाता है। तनाव मुक्ति विकार मुक्ति, कषाय मुक्ति के लिए प्रेक्षाध्यान एवं योग अचूक औषधि है। ध्यान प्रवृत्ति से निवृत्ति की यात्रा है।

सभी को प्रेक्षाध्यान एवं योग का अभ्यास करना चाहिए, जिससे वे मानसिक शांति व आनंद को प्राप्त कर सकें। इस अवसर पर मुनि जिनेशकुमारजी ने प्रेक्षाध्यान का प्रयोग भी कराया। इस अवसर पर प्रेक्षा प्रशिक्षक मोहन बोथरा, उषा धाड़ेवा, सुधा जैन, नवीना सुराना ने योगासन, प्राणायाम आदि प्रयोग कराये तथा प्रेक्षा प्रशिक्षकों ने प्रेक्षा गीत का संगान किया आभार ज्ञापन पुष्पा भुतोड़िया ने किया। योगोत्सव में लगभग १०० व्यक्तियों लिया भाग लिया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
10 जुलाई - 16 जुलाई, 2023

♦ यदि व्यक्ति-व्यक्ति के मन में नैतिकता के प्रति निष्ठा जाग जाए तो वह उत्थान की दिशा में में आगे बढ़ सकता है।
-आचार्यश्री महाश्रमण

तेयुप के विविध आयोजन

एटीडीसी के कलेक्शन सेंटर का उद्घाटन

डोंबिवली

डोंबिवली में आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर के तीसरे नये कलेक्शन सेंटर का उद्घाटन जैन संस्कार विधि से हुआ। संस्कारक दिनेश चोरड़िया और कमलेश दुग्गड़ ने संपूर्ण विधि-विधान द्वारा नमस्कार महामंत्र व मंगल-मंत्रों के उच्चारण से संपादित करवाया। उद्घाटकर्ता सभा मंत्री एवं मुख्य ट्रस्टी जगदीश परमार, प्रकाश कच्छारा, धर्मचंद बडाला, शांतिलाल कोठारी के साथ तेरापंथ युवक परिषद् अध्यक्ष ललित मेहता, मंत्री राहुल कोठारी, पंकज सिंघवी के हाथों से शुभारंभ हुआ। तेयुप अध्यक्ष ललित मेहता ने सभी का स्वागत किया और अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के मानव सेवा के इस प्रकल्प में अपने चरण गतिमान होते रहे और सभी के श्रम की सराहना की।

शुभकामनाओं के स्वर में महासभा संगठन मंत्री नरेश मादरेचा, महिला मंडल सहसंयोजिका सरोज इंटोदिया, अभातेयुप से विकास कोठारी, सभा मंत्री जगदीश परमार, शांतिलाल कोठारी, प्रकाश कच्छारा, सुरेश सिंघवी, जैन जागृति मंच से मदन कोठारी, महावीर युवा मंच से दलपत इंटोदिया ने शुभकामना दी।

भरत कोठारी, राजेंद्र कच्छारा, अमन सोनी, मनोज मादरेचा, देवेंद्र मेहता, प्रतीक चपलोत, खुशाल परमार, जीवन सिंघवी, महावीर सिंघवी, भरत धाकड़, नीता ओस्वाल का विशेष श्रम रहा। सभी गणमान्य ट्रस्टीगण, मुंबई कन्या मंडल प्रभारी जूली मेहता व तेयुप के सभी कार्यकारिणी सदस्य, फोर्टिस हॉस्पिटल से न्यूरोसर्जन डॉ. प्रकाश संकपाल, डोंबिवली से डेंटिस्ट हर्षदा भोइर की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का कुशल संचालन संयोजक मनीष धींग ने किया। आभार तेयुप मंत्री राहुल कोठारी ने किया

एटीडीसी यशवंतपुर का स्थानांतरण एवं एटीडीसी राजाजीनगर में नवीन मशीनीकरण का शुभारंभ

राजाजीनगर

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद् बेंगलुरु के निर्देशन में परिषद् के 40वें वर्ष की संपन्नता पर जैन संस्कार विधि से आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर यशवंतपुर का स्थानांतरण एवं आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर राजाजीनगर में नवीन मशीनीकरण का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ मुख्य संस्कारक विक्रम दुगड़, जितेन्द्र घोषल एवं सह संस्कारक अरविंद बैद एवं अमित भंडारी ने नमस्कार महामंत्र से किया। अध्यक्ष प्रदीप चौपड़ा ने सभी का स्वागत किया एवं तेयुप की इस वर्ष 2022-23 की गतिविधियों की संक्षिप्त जानकारी दी।

उद्घाटनकर्त्ता परिवार द्वारा शुभारंभ किया गया। मुख्य अतिथि विमल कटारिया ने विचार व्यक्त करते हुए परिषद् के 40 वर्ष की संपन्नता की शुभकामनाएं प्रदान की एवं प्रेरणा दी कि 41वें वर्ष में विशेष उपलब्धियां प्राप्त करें। आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर के प्रभारी सुरेश संचेती, सहप्रभारी प्रसन्न धोका, स्थानांतरण संयोजक रजत बैद, अभातेयुप प्रबुद्ध विचारक दिनेश पोखरणा, अभातेयुप के महामंत्री पवन मांडोत, संयोजक रोहित कोठारी एवं पूर्व अध्यक्ष विनोद मुथा ने शुभकामनाएं प्रेषित की।

प्रायोजक परिवार से दीपक सुराणा ने भी इस अवसर पर अपनी भावनाएं व्यक्त की। उद्घाटनकर्त्ता मधु-विमल कटारिया एवं डालमचंद सिद्धार्थकुमार सुराणा परिवार एवं अभातेयुप पदाधिकारियों द्वारा नवीन मशीनों का लोकार्पण किया गया। आभार ज्ञापन मंत्री विकास बाबेल ने किया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन रोहित कोठारी ने किया। इस अवसर पर अभातेयुप साथी, परिषद् के पदाधिकारी, पूर्व अध्यक्ष, कार्यसमिति सदस्य एवं गणमान्य लोग उपस्थित थे।

पद को भार नहीं उपहार समझें

साउथ कोलकाता

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि जिनेशकुमारजी ठाणा-3 के सान्निध्य में कला मंदिर में वृहत्तर कोलकाता की छः तेरापंथ युवक परिषदों साउथ कोलकाता, साउथ हावड़ा, पूर्वांचल, टॉलीगंज, लिलुआ, हिंदमोटर का शपथ ग्रहण समारोह आयोजित हुआ। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के पूर्व अध्यक्ष रतन दुगड़ ने सभी परिषदों के अध्यक्षों एवं पदाधिकारी, कार्यकारिणी सदस्यों को पद एवं गोपनीयता की शपथ ग्रहण करवाई। इस अवसर पर मुनि जिनेशकुमारजी ने सभी युवाओं को आशीर्वचन प्रदान करते हुए कहा- युवा समाज का गौरव है, शक्ति का पुंज है और ऊर्जा का भण्डार है। आज विभिन्न शाखा परिषदों का शपथ ग्रहण हुआ। पद ग्रहण एक व्यवस्था है, मूलतः सेवा करना ही दायित्व ग्रहण का धर्म है। पद को भार नहीं उपहार समझें और उत्साह, निष्ठा समर्पण सेवा भावना के साथ कार्य करना चाहिए।

तेयुप साउथ कोलकाता अध्यक्ष राकेश नाहटा, तेयुप साउथ हावड़ा अध्यक्ष गगन बैद, तेयुप पूर्वांचल अध्यक्ष संदीप सेठिया, तेयुप टॉलीगंज अध्यक्ष अनुज बागरेचा, तेयुप लिलुआ अध्यक्ष संदीप दुधोड़िया, तेयुप हिंदमोटर अध्यक्ष विक्रांत दुधोड़िया ने अपने-अपने पदाधिकारीगण व कार्यकारिणी टीम की घोषणा की। इस अवसर पर पूर्व अध्यक्षों सहित बड़ी संख्या में युवक गण उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंदजी द्वारा किया गया।

शपथ ग्रहण समारोह

औरंगाबाद

तेरापंथ युवक परिषद्, औरंगाबाद की नई टीम का शपथ ग्रहण समारोह युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि अर्हतकुमारजी ठाणा-3 के सान्निध्य में रखा गया। विवेक बागरेचा ने अध्यक्षीय वक्तव्य का वाचन और आभार व्यक्त किया। उसके बाद नव मनोनीत अध्यक्ष अंकुर लुणिया को शपथ दिलाई एवं नए कार्यकाल के लिए शुभकामनाएं दी गई।

तत्पश्चात नव मनोनीत अध्यक्ष अंकुर लुणिया ने सभी का आभार व्यक्त किया और सभी साथियों से मिलजुल कर कार्य करने की अपील की एवं नव चयनित टीम को शपथ दिलाई। मंच का व्यवस्थित संचालन मुक्ता दुगड़ ने किया।

मानव सेवा कार्य

राजाजीनगर

तेयुप के त्रिआयामी सूत्र सेवा-संस्कार-संगठन के अंतर्गत क्रियान्वित होते हुए तेयुप राजाजीनगर द्वारा लग्गेरे स्थित आसारे वृद्धाआश्रम में स्वर्गीय उत्तमचंदजी भंडारी की पुण्य स्मृति में परिवार द्वारा मानव सेवा का कार्य किया गया, जिसमें सभी आश्रम प्रवासित सदस्यों को भोजन करवाया गया। आश्रम में लगभग 150 वृद्ध सदस्य एवं 30 बच्चे भी हैं। आश्रम संचिलका मंजुला ने आश्रम की जानकारी प्रदान करते हुए आभार व्यक्त किया। तेयुप अध्यक्ष कमलेश गन्ना ने भंडारी परिवार के प्रति धन्यवाद व्यक्त किया। इस अवसर पर तेयुप से राजेश देरासरिया, सुनील मेहता, रवि चौधरी, अजिंक्या चौधरी एवं भंडारी पारिवारिक जन की उपस्थिति रही।

शपथ ग्रहण समारोह का वृहद् आयोजन

अहमदाबाद

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के 104वें जन्म दिवस पर समायोजित अभ्यर्थना एवं तेरापंथ युवक परिषद्, अहमदाबाद के शपथ ग्रहण समारोह का वृहद् आयोजन मुनि कुलदीपकुमारजी एवं मुनि मुकुल कुमारजी के सान्निध्य में हुआ। कन्या मंडल, महिला मंडल व मेवाड़ मण्डल द्वारा गीतिका की प्रस्तुति की गई। कार्यक्रम के प्रथम चरण में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा अध्यक्ष कांतिलाल चोरड़िया, तेरापंथ महिला मंडल अहमदाबाद अध्यक्षा चाँद छाजेड़, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम अध्यक्ष राकेश गुगलिया, अणुव्रत समिति अहमदाबाद नवनिर्वाचित अध्यक्ष प्रकाश धींग आदि वक्ताओं ने आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के जन्मोत्सव पर अपनी अभ्यर्थना एवं तेयुप अहमदाबाद की नई टीम के लिए शुभेच्छा एवं मंगलकामनायें प्रेषित की। मुनि मुकुलकुमारजी ने आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के जीवन पर रहस्यमय जानकारी प्रदान करते हुए ग्राफोलॉजी और आचार्य महाप्रज्ञ के विषय पर विशिष्ट प्रवचन दिया। अपने प्रवचन में आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के जीवन के अनूठे किस्सों से उनके जीवन की विशिष्टा को रेखांकित किया। तत्पश्चात् तेरापंथ युवक परिषद्, अहमदाबाद के नवनिर्वाचित अध्यक्ष कपिल पोखरना एवं टीम की विधिवत शपथ विधि का शुभारंभ हुआ। सर्वप्रथम अभातेयुप उपाध्यक्ष-II जयेश मेहता और अभातेयुप प्रबुद्ध विचारक मुकेश गुगलिया, निवर्तमान अध्यक्ष अरविंद संकलेचा ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष कपिल पोखरना को शपथ दिलाई फिर नवनिर्वाचित अध्यक्ष ने अपनी प्रबंध मण्डल एवं कार्यसमिति सदस्यों की घोषणा करते हुये उनको शपथ दिलाई। तेरापंथ युवक परिषद्, अहमदाबाद की यह शपथ विधि अपने आप अनूठी थी क्योंकि इसमें सेवा, संस्कार और संगठन के त्रिआयामी कार्यक्रमों की शुरुआत की जिसमें ''आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल्स-Now online'', ब्लड डोनेशन कैंप (57 यूनिट ब्लड कलेक्ट हुये), ATDC टेस्टिंग कूपन डिस्ट्रीब्यूशन, संगठन यात्रा, सम्यक् दर्शन कार्यशाला महत्वपूर्ण कार्य हैं।

कार्यक्रम में अभातेयुप उपाध्यक्ष-II जयेश मेहता, कॉरपोरेटर प्रतिभा बेन जैन एवं समाज के गणमान्य व्यक्तियों सहित सकल समाज की विशेष उपस्थिति रही। कार्यक्रम का कुशल संचालन विकास पितलिया एवं कुलदीप नवलखा एवं आभार ज्ञापन अतुल सिंघवी ने किया।

मानव सेवा कार्य

पूर्वांचल

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा निर्धारित आयाम सेवा-संस्कार-संगठन को पूर्ण साकार करते हुए तेरापंथ युवक परिषद्, पूर्वांचल-कोलकाता एवं तेरापंथ किशोर मंडल, पूर्वांचल-कोलकाता ने साथ मिलकर सेवा कार्य हेतु Alakendu Bodh Niketan Residential, Kankurgachi के विशेष रूप से विकलांग 45 बच्चों को नाश्ता, मिठाई, फल और जूस का वितरण किया। संस्थान के संचालक ने कहा कि तेरापंथ युवक परिषद् एवं तेरापंथ किशोर मण्डल, पूर्वांचल कोलकाता समय-समय पर इन बच्चों को सहयोग करती रहती है और तेरापंथ युवक परिषद् के उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना की। सर्वप्रथम नमस्कार महामंत्र का जाप किया गया। तत्पश्चात सभी साथियों ने उत्साहपूर्वक भोजन वितरण में सहयोग किया। इस कार्यक्रम में अध्यक्ष संदीप सेठिया के नेतृत्व में तेयुप व किशोर मंडल ने सहभागिता दर्ज कराई।

व्यक्ति परिवार व समाज में जीता है। यदि उसका क्रोध और आवेश पर नियंत्रण नहीं है और वाणी में माधुर्य नहीं है तो वह परिवार और समाज में सम्मान प्राप्त नहीं कर सकता।

-आचार्यश्री महाश्रमण

♦ व्यक्ति क्रिया के साथ प्रतिक्रिया न करे। प्राणिमात्र के साथ मैत्री का व्यवहार करते रहना चाहिए।

-आचार्यश्री महाश्रमण

तेरापंथ सरताज की सन्निधि में आयोजित हुआ 264वां तेरापंथ स्थापना दिवस

नियति के योग के साथ व्यक्ति का पुरुषार्थ भी काम करता है : आचार्यश्री महाश्रमण

दिनांक 03 जुलाई 2023, नन्दनवन

आषाढ़ी पूर्णिमा, तेरापंथ धर्मसंघ का २६४वां स्थापना दिवस। तेरापंथ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मंगल देशना प्रदान कराते हुए फरमाया कि आगम में श्रद्धा और आस्था के बारे में बताया गया है। श्रद्धा अच्छी हो तो श्रद्धेय भी अच्छा हो, यह अपेक्षित है। श्रद्धेय और श्रद्धा आस्थेय और आस्था इन दोनों का गहरा संबंध है। आस्थेय में कुछ सत्व, तत्व और अर्हता है, तभी तो एक बुद्धिमान व्यक्ति के मन में उसके प्रति आस्था, श्रद्धा का भाव प्रकट हो सकता है। वह सत्य है, वही सत्य ही है, जो जिनों ने कहा है, यह बात आस्था से जुड़ी हुई है। बीज के भीतर वृक्ष का सार भरा हुआ है। वृक्ष दिखाई देता है, बीज दिखाई नहीं देता, पर बीज उस वृक्ष की नींव का आधार है। आदमी पीछे से क्या लेकर आया है, वह हर किसी को प्रत्यक्ष दिखाई नहीं देता। जो क्षयोपशम का भाव है, वह मानों आदमी पीछे से लेकर आता है। आचार्य भिक्षु ने केलवा में जो दीक्षा ली थी, वह तेरापंथ का बीज थी। तेरापंथ स्थापना दिवस का आयोजन वृक्ष के रूप में है।

तेरापंथ की स्थापना को २६३ वर्ष हो गए। नियति के योग के साथ व्यक्ति का पुरुषार्थ भी काम करता है। एक धर्मसंघ का जन्म हुआ और नियति के योग के साथ इसमें विस्तार होता गया। विकास के लिए अभी भी अवकाश है। मुमुक्षु संख्या वृद्धि इसका आधार हो सकता है। आचार्य भिक्षु को बहुत सहन करना पड़ा होगा। आचार्य भिक्षु में भी सत्व था। वे आगे बढ़ते गए। तेरापंथ के सामने विरोधों की तो परम्परा सी चली थी। आचार्य तुलसी तक विरोध चला था, लेकिन आचार्यों के सत्व और दृढ़ आस्था से विरोध समाप्त होते गये।

आचार्य प्रवर ने साधु-साध्वियों को प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि साधु-साध्वियों को तेरापंथ को समझने के लिए तेरापंथ के दर्शन को भी समझने का प्रयास करना चाहिये। साधु-साध्वियों को तेरापंथ के इतिहास का ज्ञान हो, तेरापंथ की मर्यादा और व्यस्थाओं का भी ज्ञान हो। इन्हें जितनी गहराई से समझने का प्रयास होगा, उतना ही अधिक विकास भी हो सकता है। तेरापंथ की गरिमा को बढ़ाने का प्रयास होना चाहिये।

तेरापंथ स्थापना दिवस हमारे लिए प्रेरणा का निमित्त बने। संख्या का महत्त्व है तो मौलिकता और गुणवत्ता का भी महत्त्व है। हमारे धर्मसंघ के विकास में आचार्यों को साध्वीप्रमुखा व साधु-साध्वियों का सहयोग मिलता है। संगठन के विकास में श्रावक-श्राविकाएं भी सहयोगी बने हैं। हम धर्मसंघ के धार्मिक-आध्यात्मिक विकास में अपना जितना योगदान दे सकें, वह अच्छी बात हो सकती है। इस धर्मसंघ को ऊंचाई पर ले जाने में हमारे कंधे जितने काम आ सकें, देने का प्रयास करें। हम चातुर्मास में अच्छी साधना, अच्छा विकास करें।

आचार्य प्रवर ने 'शासन कल्पतरू' गीत के कुछ पद्यों का संगान किया। पूज्यवर ने नंदनवन से चातुर्मास समाप्ति पर आगे के विहार का संभावित कार्यक्रम भी घोषित किया।

साध्वी प्रमुखा विश्रुतविभाजी ने फरमाया कि जब आचार्यश्री भिक्षु ने भाव दीक्षा ली थी, वह समय शुभ था। ज्योतिष के अनुसार सूर्योदय और सूर्यास्त का समय महत्त्वपूर्ण होता है। आचार्यश्री भिक्षु को एक प्रकाश प्राप्त हुआ था और वे उस मार्ग पर चल पड़े। आचार्यश्री भिक्षु ने अरिहंत की आज्ञा ले, ८ पापों का त्याग कर, सिद्धों की साक्षी से संयम के राजमार्ग को स्वीकार कर लिया। आज का दिन आचार्यश्री भिक्षु के समर्पण का दिन है। साध्वीवर्या सम्बुद्धयशाजी ने फरमाया कि महापुरूषों की सिद्धि उनके सत्व में होती है। संकल्प शक्ति दृढ़ होनी चाहिए। आचार्यश्री भिक्षु में यह गुण देख सकते हैं। घोर विरोधों में भी वे दृढ़ रहे। बाधाओं को दूर करते हुए वे आगे बढ़ते रहे। मुख्य मुनि महावीरकुमारजी ने फरमाया कि तेरापंथ की स्थापना के पीछे कुछ आकाशीय ज्योतिषिय कारण भी थे, जिसका उल्लेख हमारे आगम कल्पसूत्र ग्रंथ में मिलता है। किस तरह जैन धर्म का ह्रास हुआ और फिर किस तरह भगवान के निर्वाण के कुछ वर्षों बाद वि. सं. १८५३ के पश्चात जैन धर्म का विकास होता गया। १८५३ में तेरापंथ में मुनि हेमराजजी की दीक्षा हुई थी, उसके पश्चात तेरापंथ का भी विकास होता गया। आज के कार्यक्रम में मुनिवृंद एवं साध्वीवृंद ने अलग-अलग गीतिकाओं से अपनी भावना अभिव्यक्त की। संघगान के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

धर्म उत्कृष्ट मंगल...

पृष्ठ 12 का शेष... आप एक मिशन पर कार्य कर रहे हैं। आपने ५५००० किमी की यात्रा की है। हम आपका आशीर्वाद लेने आये हैं। हमने भी ड्रग फ्री मुंबई पर कार्य शुरू किया है। व्यवस्था समिति द्वारा मुख्यमंत्री का सम्मान किया गया। पूज्यवर के स्वागत में आचार्यश्री महाश्रमण आवास व्यवस्था समिति, मुम्बई के अध्यक्ष मदनलाल तातेड़, स्वागताध्यक्ष सुरेन्द्र बोरड़ पटावरी, महामंत्री सुरेन्द्र कोठारी, महेश बाफणा, प्रबंधक मनोहर गोखरू, उदय आचार्यजी, महासभा के पूर्व अध्यक्ष किशनलाल डागलिया, जैन विश्व भारती के मंत्री सलिल लोढ़ा, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के सहमंत्री भूपेश कोठारी, निवर्तमान अध्यक्ष संदीप कोठारी, अमृतवाणी अध्यक्ष रुपचन्द दूगड़, सुमतिचन्द गोठी, भंवरलाल कर्णावट, स्थानीय विधायक निरंजन दावखरे, तेरापंथी सभा मुम्बई के कार्याध्यक्ष नवरत्नमल गन्ना, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा रचना हिरण, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम अध्यक्ष राज सिंघवी, अणुव्रत समिति अध्यक्ष रोशनलाल मेहता, माल्विका बेन एवं भव्या बाफणा ने अपने श्रद्धासिक्त भावों को अभिव्यक्तियां दी। प्रवास व्यवस्था समिति मुम्बई, तेरापंथ महिला मण्डल, तेरापंथ युवक परिषद् एवं उपासक श्रेणी द्वारा गीतों के माध्यम से भाव व्यक्त किये गये। संगायक रवि जैन एवं विराग मधुमालती ने मराठी भाषा में गीत का संगान किया। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों एवं तेरापंथ कन्या मण्डल की प्रस्तुतियां हुई। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया। साध्वी मधुस्मिताजी के सिंघाड़े ने श्रीचरणों में पहुंचकर दर्शन किये। प्रतिमाधारी श्रावक धनराज बैद को पूज्यवर ने मुमुक्षु श्रेणी में आवेश का मंगलपाठ सुनाया।

अध्यात्म की साधना राग...

पृथम 2 का शेष...

अनेक जन्मों में साधना करते-करते वह स्थिति आती है और वे पूर्ण वीतराग बन जाते हैं। भगवान महावीर ने तो अंतिम भव में ही विशेष साधना की थी। तीर्थंकर नाम कर्म का बंध पहले ही हो जाता है। सामान्यतया पुरुष ही तीर्थंकर बनते हैं। प्रथम और अंतिम तीर्थंकर के साधु अलग होते हैं, बीच के २२ तीर्थंकर के साधु थोड़े अलग होते हैं। प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभ के साधु ऋजु जड़ और अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर के साधु वक्र जड़ होते हैं। बीच के २२ तीर्थंकरों के साधु ऋजु प्राग्य होते हैं।

हर तीर्थंकर अध्यात्म की देशना देकर तीर्थ की स्थापना करते हैं। प्रवचन करना तीर्थंकरों का काम होता है। जैन जगत में सर्वे-सर्वा व्यक्ति तीर्थंकर ही होते हैं। उनकी साधना के साथ उनकी पुण्यवत्ता होती है। हम भी राग-द्वेष को जीतने की दिशा में आगे बढ़ें। चातुर्मास के संदर्भ में पूज्यवर ने फरमाया कि २ जुलाई को चातुर्मास प्रारंभ होने वाला है। चातुर्मास का समय साधना का समय है, जिसमें तप आदि अनेक आध्यात्मिक प्रयोग चलते हैं। अनेक आध्यात्मिक प्रसंग चातुर्मास में आ जाते हैं। संसारपक्ष में मुंबई से संबद्ध मुनि अनुशासनकुमारजी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। रंजना महेन्द्र सिंघवी ने पूज्यवर से २६ की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। जैन विश्व भारती के मंत्री सलिल लोढ़ा एवं सरला भूतोड़िया ने पूज्यवर के स्वागत में अपने भाव व्यक्त किये। तेरापंथ महिला मंडल, ठाणे एवं मुंबई जैन संस्कारकों ने अलग-अलग स्वागत गीत प्रस्तुत किये। तेरापंथ महिला मंडल, मुंबई ने आगमोत्सव की जानकारी दी एवं गीत के माध्यम से अपनी भावनाएं व्यक्त की। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

जैन विश्व भारती में हुआ सचिवालय भवन व योगक्षेम भवन का शिलान्यास

लाडनूं

जैन विश्व भारती परिसर में आगामी 2026 में योगक्षेम वर्ष के आयोजन को ध्यान में रखते हुए विकास कार्यों की श्रृंखला में 'सचिवालय भवन' व 'योगक्षेम भवन' का शिलान्यास जैन संस्कार विधि से किया गया। जैन संस्कारक मर्यादा कुमार कोठारी, चमन दुधोड़िया, देवेन्द्र, डागा, पवन छाजेड़ के द्वारा मंत्रोच्चार व विधिपूर्वक भूमिपूजन करवाया गया। नवीन सचिवालय भवन का शिलान्यास बी. रमेशचंद-उषा बोहरा चेन्नई द्वारा किया गया। लगभग तीन हजार स्केवयर फीट में बनने वाले नवीन भवन का प्रारुप संसद भवन की तरह प्रतीत होगा। प्रशासनिक कक्ष के साथ साथ एक कान्फ्रेंस हॉल भी बनाया जाएगा। इसी श्रृंखला में योगक्षेम भवन का शिलान्यास नवीन-सुषमा बैंगाणी लाडनूं निवासी द्वारा किया गया। उक्त भवन योगक्षेम में सेवादर्शन के लिए पधारने वाले श्रावक समुदाय की आवास व्यवस्था की दृष्टि से किया जा रहा है।

इस अवसर पर जैन विश्व भारती के अध्यक्ष अमरचंद लुंकड़, न्यासी पन्नालाल बैद, राजेन्द्र मेहता, मंत्री सलिल लोढा, संयुक्त मंत्री श्री विमल चिप्पड़, परामर्शक भागचंद बरड़िया, जैविभा संस्थान के कुलपति बच्छराज दुगड़, पूर्व अध्यक्ष धरमचंद लुंकड, संचालिका समिति सदस्य विजयराज आंचलिया, गौतमचंद धारीवाल, प्रवीण बरड़िया आदि उपस्थित रहे। विशिष्ट अतिथि के रुप में विजया मालू, सायर बैंगाणी, पुलिस उपअधीक्षक राजेश ढाका, अभातेयुप केन्द्रीय कार्यालय सचिव राजेन्द्र खटेड़ व सदस्यगण, तेरापंथ महिला मंडल से नीता नाहर, अणुव्रत समिति से शांतिलाल बैद, टीपीएफ से विनीत सुराणा, तेयुप परिवार, जैविभा की समस्त इकाइयों एवं जैविभा संस्थान परिवार के सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम की आयोजना में विजयश्री शर्मा, सुशील मिश्रा, संजय बोथरा आदि का सहयोग

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
10 जुलाई - 16 जुलाई, 2023

♦ गृहस्थ के लिए सांसारिक और आध्यात्मिक दोनों दृष्टिकोण हो सकते हैं, किंतु साधु को आत्माभिमुखी रहना चाहिए। उसके लिए पदार्थ गौण होता है।

-आचार्यश्री महाश्रमण

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण का नंदनवन में हुआ भव्य चातुर्मासिक मंगल प्रवेश

अभिनंदन हेतु श्रीचरणों में पहुंचे महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे

धर्म उत्कृष्ट मंगल है : आचार्यश्री महाश्रमण

28-06-2023 नंदनवन

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी का मुंबई में २०२३ के घोषित चातुर्मास हेतु पावस प्रवास और मंगल प्रवेश का पावन प्रसंग। विशाल जनमेदिनी के साथ महामहिम आचार्यश्री ने अपनी धवल सेना के साथ लगभग ६ बजकर ६ मिनट पर नंदनवन परिसर में पावन प्रवेश किया। मुम्बई का सम्पूर्ण श्रावक-श्राविका समाज पूज्यवर के प्रति कृतज्ञता के भाव अर्पित कर रहा था।

उपस्थित जनमेदिनी को अमृत रस का पान करवाते हुए परम उपकारी ने फरमाया कि हमारी दुनिया में मंगल की कामना की जाती है। आदमी विघ्न-बाधाओं से बचने की इच्छा करता है और बचने का प्रयास भी करता है। शुभ मुहुर्त में प्रवेश करते हैं, इसमें भी मंगल की कामना अन्तर्निहित हो सकती है। अनेक कार्यों में मंगल की कामना होती है।

कुछ पदार्थ भी मंगल के रूप में आसेवित किये जाते हैं। शास्त्रकार ने मंगल के संदर्भ में अत्यन्त महत्वपूर्ण बात बताई है कि धर्म उत्कृष्ट मंगल है। मेरा भी मंतव्य है कि धर्म से बढ़कर दूसरा कोई मंगल नहीं है। अहिंसा, संयम और तप में धर्म है। सम्पूर्ण आत्मशुद्धिकारक धर्म इसमें आ गया।

अहिंसा आदमी के जीवन में है, धर्म का एक आयाम उसके जीवन में आ गया। संयम और तप है तो धर्म का दूसरा-तीसरा आयाम भी जीवन में आ गया। साधु-साध्वियां जो महाव्रती हैं, वे अपने आप में मंगल है। मंगल पाठ सुनना भी महत्वपूर्ण मंगल है। अरहंत, सिद्ध, साधु और केवली प्रज्ञप्त धर्म मंगल है।

आज हमने वि सं २०८० के चातुर्मास के लिए चातुर्मास के प्रवास स्थल में चातुर्मासिक प्रवेश किया। सन् २०१६ के मर्यादा महोत्सव में मैंने मुम्बई चातुर्मास हेतु कहा था, उसके अनुसार मुंबई आकर चातुर्मासिक प्रवेश कर लिया। गुरुदेव तुलसी ने सन् १९५४ का चातुर्मास एवं सन् १९५५ का मर्यादा महोत्सव मुंबई में किया था। सन् २००३ में आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने मुंबई में मर्यादा महोत्सव एवं लंबा प्रवास किया था।

आचार्य प्रवर ने 'भिक्षु म्हारे प्रगट्याजी भरत खेतर में' गीत के दो पद्यों के सुमधुर संगान के साथ फरमाया कि आचार्य भिक्षु हमारे आद्य प्रवर्तक थे। गुरुदेव तुलसी व आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का बहुत उपकार रहा है। 'कैसी वह कोमल काया रे' एवं 'पूज्यवर महाप्रज्ञ भगवान' गीत के पद्यों का भी पूज्यवर ने संगान करवाया एवं शासन माता साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी का भी स्मरण किया।

पूज्यवर ने साधु-साध्वियों की संख्या का उल्लेख करते हुए फरमाया कि डॉ महावीर मुनि सहित ४९ संतों के साथ प्रवेश किया है। साध्वीप्रमुखा विश्रुत विभाजी आदि १२५ साध्वियों का प्रवेश हुआ है। सभी का स्वास्थ्य अच्छा रहे, शुभ योग में रहे। यह पांच महीने का चातुर्मास धर्ममय हो। व्यवस्था समिति के कार्यकर्ताओं में अच्छा उत्साह रहे। मर्यादा महोत्सव भी वृहत्तर मुंबई में ही है। पूर्वाचार्यों का स्मरण करते हुए हमारा चातुर्मास धर्ममय रहे। बहुश्रुत परिषद् के पूर्व संयोजक मुनि महेन्द्रकुमारजी का स्मरण करते हुए आचार्य प्रवर ने फरमाया कि मैं उनके साथ के पांच संतो में उनको देख रहा हूं। साध्वी प्रमुखाजी के प्रवास स्थल का नाम अनुकम्पा भवन कर दिया, हमारे प्रवास स्थल की पहचान भिक्षु विहार है। पास में साध्वियों का एक भवन और है, उसका नाम मैत्री भवन और एक साध्वी प्रमुखाजी के प्रवास स्थल के पास में एक और भवन है, उसका नाम अहिंसा भवन व समणियों के आवास स्थल की पहचान सौहार्द भवन करने की घोषणा की।

साध्वी प्रमुखाश्रीजी ने फरमाया कि पूज्यवर ने सपना देखा था कि मुझे मुंबई चातुर्मास करना है। संकल्प किया और चरणों को गतिशील बनाते हुए चले, राजस्थान से लगभग २५०० किमी चलकर मुंबई पहुंचे हैं। चारों ओर उत्साह का वातावरण है। महापरिव्राजक की महायात्रा को विश्राम मिल रहा है। भौतिक सुख-सुविधाओं से सुसज्जित महानगरी में महायायावर कल्पवृक्ष बनकर आये हैं। महासूर्य से आलोक प्राप्त करने का प्रयास करें।

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिन्दे पूज्यवर की सन्निधि में पहुंचे। पूज्यवर ने सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के बारे में समझाते हुए आशीर्वचन फरमाया। मुख्यमंत्री ने कहा कि मैं महाराष्ट्र की धरती पर आचार्य महाश्रमणजी का हृदय से स्वागत अभिनन्दन करता हूं। महाराष्ट्र संतों की भूमि, पावन भूमि है। आपके आने से समृद्ध भी हो जायेगी।

शेष पृष्ठ 11 पर

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण के श्रीमुख से आध्यात्मिक मंत्रोच्चार के साथ हुआ चातुर्मास का शुभारंभ

जीवन में सही मार्ग के चयन का भी बड़ा महत्त्व : आचार्यश्री महाश्रमण

02 जुलाई 2023 , नंदनवन

आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी, चातुर्मासिक चतुर्दशी और हाजरी का वाचन। नंदनवन प्रवास का प्रथम रविवार। तेरापंथ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी ने पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान कराते हुए फरमाया कि आज चातुर्मास लगने वाला हैं। पूज्यवर ने चातुर्मास स्थापना पर आध्यात्मिक मंत्रों का सम्मुच्चारण करवाया।

जिनेश्वरों ने मार्ग प्रज्ञप्त किया है, रास्ता बताया है। जीवन में सही मार्ग के चयन का भी बड़ा महत्त्व होता है। मंजिल का तय करना महत्त्वपूर्ण है, फिर मंजिल का रास्ता सही है या नहीं, उस पर ध्यान देना जरूरी है। मार्ग सही है तो चलते-चलते मंजिल भी मिल सकती है। मनुष्य जीवन की परम मंजिल है- मोक्ष-मुक्ति। मोक्ष के लिये चारित्र का रास्ता स्वीकार किया जाता है। चारित्रात्मा शब्द में सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन, सम्यक् चारित्र और सम्यक् तप चारों ही आ जाते हैं। चारों का योग होने पर मोक्ष का मार्ग बन जाता है। सम्यक् दर्शन नहीं है तो सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चारित्र का गुण नहीं होता। आज चातुर्मासिक चतुर्दशी है। इस बार चतुर्दशी को ही चातुर्मास लगा है। इस बार का चातुर्मास पांच महीने का है, इसलिए सवाया है। चारित्रात्माओं के लिए यह स्थिरता का समय होता है। इसमें व्यवस्थित अध्ययन, साधना, तप आदि हो सकते हैं।

श्रावक-श्राविकाओं में भी इक्कीस रंगी तप शुरू हुआ है। संबंधित साधु-साध्वियां प्रेरणा देते रहें। ज्ञानशाला भी अच्छी चले। प्रेक्षाध्यान, तत्त्वज्ञान की कक्षाएं चल सकती है। संवर एवं दर्शन की आराधना भी होती है। जिनवाणी के प्रति श्रद्धा हो, कषाय मंद हो, तत्त्व की आराधना होती रहे। इस चातुर्मास में ५० साधु और १२७ साध्वियां, अनेक समणियां यहां पर हैं।

चातुर्मासकाल में ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की साधना होती रहे, चातुर्मास अच्छा बीते, यह हमारी कामना है। चातुर्मासकाल का पूरा धार्मिक-आध्यात्मिक लाभ उठाने का प्रयास हो। सबका स्वास्थ्य भी अच्छा रहे इसका भी प्रयास रहे। पूज्यवर ने हाजरी का वाचन किया। इक्कीस रंगी तपस्या से जुड़े तपस्वियों को प्रत्याख्यान करवाये।

आज के कार्यक्रम में अमृत कांठेड़, नरेश मेहता, छत्तर खटेड़ ने अपनी भावना अभिव्यक्ति की। रेणु कोठारी ने गीत के माध्यम से अपनी भावना व्यक्त की। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।